श्री कृष्णजी
व
कलकी अवतार

लेखक

मौलवी बुरहान अहमद ज़फर

प्रकाशक

जमाते अहमदिया

नाम किताब	:	श्री कृष्ण जी व कलकी अवतार
लेखक	:	मौलवी बुरहान अहमद ज़फ़र
प्रथम प्रकाशन	:	1991 ई.
संख्या	:	2000
द्वितीय प्रकाशन	:	2002 ई.
संख्या	:	2000
प्रकाशक	:	Nazarat Nashro Ishaat Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

ISBN : 81-7912-044-9

विषय सूची

प्राक्कथन

जमाते अहमदिया इस्लाम के सभी नियमों का पालन करती है. इसी सम्बन्ध में कुर्आन की शिक्षा की रोशनी में वह परमात्मा की ओर से आऐ हुए सभीअवतारों का सम्मान व आदर करती है. श्री कृष्ण जी भी परमात्मा के एक अवतार थे इन को अवतार के रुप नें माना जाना सभी युगों से प्रमाणित है. मुसलमानों के भी बहुत से माननीय बुज़र्गो ने श्री कृष्ण जी को अवतार माना है।

इस छोटी पुस्तक में मौलवी बुरहान अहमद साहिब ज़फर ने इस का उल्लेख किया है। उर्दू पुस्तक जिस का हिन्दी अनुवाद उनकी सहायता से मुज़फ्फ़र अहमद साहिब बट ने किया । इस पुस्तक में कलकी अवतार के पुनः आगमन का भी उल्लेख है। जिसे जमाते अहमादिया बम्बई प्रकाशित कर रही है। आशा है कि यह पुस्तक हिंन्दु-मुस्लिम समाज को एक दूसरे के निकट लाने का काम करेगी। अतः कलकी अवतार से परिचित करवाएगी।

गुलाम महमूद राईचूरी
अमीर जमाते अहमदिया मुंबई

श्री कृष्णजी व कलकी अवतार

परिचय

परमात्मा ने जब मनुष्य को पैदा किया तो इसके साथ ही अवतारों का आगमन शुरु करके मनुष्य की अध्यात्मिक उन्नति के सामान पैदा कर दिये. जैसे-जैसे मनुष्य संसारिक तौर पर प्रगति करता गया वैसे-वैसे खुदा ने उसकी मानसिक शक्ति के अनुसार उसको अध्यात्मिक उन्नति देने के लिए नई-नई शिक्षाओं का मार्गदर्शन करके उनमें अवतार भेजे. यही कारण है कि भिन्न-भिन्न युगों में भिन्न-भिन्न अवतारों के नाम सुनने में आते हैं. लेकिन ये सब अवतार परमात्मा की ओर से एक सच्ची और वास्तविक शिक्षा लेकर आये थे. हर आने वाला अवतार अपने से पहले अवतार की वास्तविक शिक्षा को दुनियां में पेश करता और उसके साथ-साथ खुदा की तरफ से आनेवाले नये आदेश भी दुनियां वालों को देता. जो आनेवाले अवतार को मान लेते और पहले के आदेशों पर अम्ल करने के साथ-साथ नये आदेशों को भी स्वीकार कर लेते तो एक नये धर्म में प्रवेश कर लेते और न मानने वाले अपने पहले वाले अवतार के आदेशों पर अम्ल करने के कारण पहले वाले धर्म में माने जाते. इस तरह अवतारों का सिलसिला जारी रहा. नये नये आदेश आते रहे और नये नये धर्म संसार में बनते गये. परन्तु यदि देखा जाए तो पूर्व आनेवाले अवतार की वास्तविक शिक्षा जो भी वो परमात्मा की ओर से लाया था. उसकी झलक हर आनेवाले अवतार की शिक्षा में मौजूद है. इस तरह ये सिलसिला आख़िर तक चला जाता है. धार्मिक शिक्षा की उन्नति की उदाहरण इसतरह दी जा सकती है जैसे मनुष्य ने संसारिक तौर पर धीरे-धीरे उन्नति की उसकी सोचने समझने की शक्ति धीरे-धीरे उजागर हुई और ज्ञानिक दृष्टि से प्रगति करता गया. इसी तरह परमात्मा ने भी मनुष्य की बुद्धि को देखते हुए अवतारों द्वारा अध्यात्मिक उन्नति के सामान पैदा किये. मानवीय प्रकृति में एक बात यह भी दाखिल है कि वह अपने बापदादा के धर्म को छोड़ने के लिए बिलकुल राज़ी नहीं होता है. अपने मुंह से तो यह बात कहेगा कि तुम जो बात कहते हो ठीक है लेकिन हमारे बाप दादा ऐसा ही करते थे इसलिए हम भी ऐसा ही करेंगे और यह बात केवल धार्मिक मामलों में की जाती है दुनियांदारी के मामले में नहीं. संसारिक मामलों में मनुष्य जंगलों से निकलकर महलों में चला गया. नग्नता छोड़कर वस्त्र धारण किये. धरती छोड़कर चाँद पर चला गया. अर्थात हर क्षेत्र में उसने धीरे धीरे उन्नति की और यदि इन्सान ने उन्नति नहीं की और नहीं करनी चाही तो वह केवल धर्म में और परमात्मा की ओर से मिलनेवाली शिक्षा धारण करने में और आत्मियता को हासिल करने के लिए

सरल रास्तों को अपनाने में. जब भी कभी परमात्मा की तरफ से कोई समझाने वाला आया तो उस युग के लोगों ने उसे ठुकरा दिया. इसी बात का उल्लेख करते हुए खुदा कुर्आन में फ़रमाता है.

"وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا" (البقرہ آیت ۱۷۱)

अर्थात "और जब उनसे कहा जाए कि इस कलाम को जो अल्लाहने उतारा है पैरवी (अनुसरण) करो तो वे कहते हैं कि हम तो उसी ढंग से अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बापदादा को पाया."

यही कारण है कि दुनियां में इतने धर्म देखने में आते हैं. किसी ने किसी नबी का इन्कार कर दिया और किसी ने किसी का. यदि सभी लोग एक के बाद दूसरे आने वाले अवतार को स्वीकार करते चले जाते तो आज समस्त संसार एक गिरोह होता. परमात्मा की इच्छा ही ये थी कि वह सभी इन्सानों को जो भिन्न-भिन्न बस्तियों और शहरों में आबाद थे धीरे धीरे उन्नति देकर इसे एक गिरोह बना देता.

एक गिरोह बनाने और धर्म की उन्नति की उदाहरण इस प्रकार भी दी जा सकती है कि यदि कोई व्यक्ति अपने बच्चे को उच्च शिक्षा दिलाना चाहे तो वह उसे पहले ही दिन उच्च कक्षा की पुस्तकें लाकर नहीं देता बल्कि उसकी बुद्धि के अनुसार प्रारम्भिक शिक्षा की पुस्तकें, वह भी तस्वीरों वाली, ला कर देता है. ताकि वह तस्वीर को देखकर शब्दों को पहचान सके. इसके विपरीत यदि उसे उच्च कक्षा की ही पुस्तकें लाकर दी जाएं तो बह उन्हें फाड़ने के इलावा कोई काम न करेगा. ऐसी अवस्था में क्या हम उस बच्चे को बेवकूफ कहेंगे या फिर वह मूर्ख हो गा जो उसे प्रारम्भिक शिक्षा की पुस्तकें देने की बजाए उच्च कक्षा की पुस्तकें देता है. ठीक इसी प्रकार यह अर्थ इस आयत का होगा कि तुम्हारे पूर्वज इस शिक्षा को समझने और पढ़ने की क्षमता नहीं रखते थे जैसा कि तुम रखते हो. वे लोग जो धर्म की प्रारम्भिक शिक्षा पर बैठे हैं उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए. जोये कहते हैं यदि हमारे अवतार या नबी के बाद किसी और नबी ने कोई शिक्षा लानी थी तो हमारे नबी को ही क्यों न दी गई? इसलिए नये आने वाले को स्वीकारने से इन्कार करते हैं.

आश्चर्य की बात है कि एक इन्सान जो एक बच्चे को उच्च शिक्षा दिलाने की ख़ातिर बड़ी बुद्धिमता से काम लेता है और धीरे-धीरे उसकी शिक्षा के स्तर को बुलन्द करता है. इसके मुक़ाबिल परमात्मा को जो ज्ञान का भण्डार है एक मामूली इन्सान जितनी बुद्धि का मालिक भी नहीं समझा जाता और कहा जाता है कि परमात्मा ने इन्सान को जो भी देना था वह आरम्भ में ही

पहले नबी के द्वारा ही दे दिया. जब एक इन्सान अपने बच्चे को शिक्षा दिलाने की ख़ातिर ऐसा नहीं करता हो फिर परमात्मा इन्सान के साथ ऐसी हालत में ऐसा क्यों करता जबकि इन्सान की हालत एक बच्चे जैसी थी.

और इसको रहन सहन ओढ़ने बिछौने खाने-पीने की तहजीब भी न थी. वर्तमान युग में भी ऐसी उदाहरण मिल सकती है. वर्तमान युग कम्पयुटर का युग है. एक शिक्षित व्यक्ति इसके द्वारा आश्चार्यजनक काम दिखा सकता है. लेकिन यदि इसी कम्पयुटर को अण्डेमान के जंगली आदमियों के सामने रख दिया जाए जो आज तक सभ्य भी नहीं हुए. जिन्हें नग्न ढांपने तक का अहसास नहीं वे इसे तोड़ने के सिवा उससे और कोई काम नहीं करेंगें. आज सरकार इन्हें आम सभ्य इन्सानों के साथ मिलाने की इन्तिहाई कोशिश कर रही है. अब वे इन्सान ज्ञान को क्या जाने और धर्म को क्या समझें या आज के साईंस के युग से क्या सरोकार रखते हैं. वे तो कोमल बच्चे की तरह हैं जिसको सम्भालना होगा.

"अवतारों का आगमन"

संसार में पाये जाने वाले सभी धर्मों में भिन्न भिन्न अवतारों के आगमन की घटनाएं और हालात मिलते हैं. इसीतरह दुनियां का कोई हिस्सा भी ऐसा नहीं है जहां अवतारों के आगमन को माना न गया हो.ये हो सकता है कि दूर दराज़ के इलाका में प्रकट होने के कारण इसकी ख़बर किसी दूसरे इलाका में न पहुंची हो. और ये भी संभव हो सकता है कि बहुत समय पहले आने की वजह से आज उनकी ज़िन्दगी के हालात सही तौर पर दुनियां के सामने न आये हों और उनकी बिगड़ी हुई शक्लें किसी न किसी रुप में मौजूद हों.

हिन्दुस्तान के इतिहास का और यहां पाये जाने वाले धर्मो का अध्ययन करने से यहां भी कई अवतारों का ज़िक्र मिलता है. जिनमें श्री कृष्ण जी महाराज और श्री राम चन्द्र जी महाराज, श्री गौतम बुद्ध जी महाराज़ विशेष हैं इनके इलावा महावीरजीका नाम भी आता है. लेकिन मुझे इस पुस्तिका में विशेष तौर पर श्री कृष्ण जी महाराज के संबन्धसे कुछ कहना है.

श्री कृष्ण जी की हस्ती ऐसी है जिस की शान और शौक़त हर युग में मानी जाती है और हिन्दुओं के निकट उनका एक उच्चस्थान है. इस लिए हिन्दुओं में श्री कृष्ण जी के दोबारा प्रकट होने को बड़ी चाहत से बताया जाता है और इसके शीघ्र प्रकट होने की इच्छा की जाती है. और इसकी गैर-मामूली शान और हस्ती की बुनयाद इस प्रवचन पर है, जिसको फैज़ी ने यूं कहा है :

चूं बुनयादे दीं सुस्त गरदो बसे ।
नमा नीम खुद रा बशक्ले कसे ।।

अर्थात जब कभी धर्म में कमज़ोरी और गिरावट प्रकट होती है तो मैं अपने आप को किसी अस्तित्व में जाहिर करता हूं.

इसके संबन्ध में भगवत् गीता में स्वयं श्रीकृष्ण जी महाराज ने फ़रमाया है कि:

यदा यदा हि धर्मस्य गूलानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
पवित्राणाय साधूनाम विनाशांय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थायि सम्भवामि युगे युगे ।।

(श्री मद भगवत गीता अध्याय ४ श्लोक ७–८)

अर्थात् जब भी धर्म का नाश और अधर्म की वृद्धि होती है तब तब ही मैं अपने रुप को प्रकट करता हूँ. साधू पुरुषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म की स्थापना के लिए युग युग में प्रकट होता हूँ (इस श्लोक का अर्थ सभी अनुवादकों और लेखकों ने ऐसा ही किया हैं)

इससे स्पष्ट होता है कि भिन्न-भिन्न युगों में लोगों को सुधारने के लिए जो लोग आते हैं वे कृष्ण रुपी होते हैं. जिसका मतलब यह कि सभी अवतारों का एक ही काम होने के फलस्वरूप, चाहे वे अलग अलग होते हैं, एक ही नाम से जाने जाते हैं. इसलिए श्री कृष्णजी महाराज ने कहा कि जब भी धर्म को शक्ति देनी होगी तो मैं ही किसी न किसी रुप में प्रकट हूंगा और होता आया हूँ.

इसबात से भी कोई विरोध नहीं किया जा सकता कि परमात्मा एक अवतार को दूसरे अवतार का नाम देता है. जबकि स्पष्ट रुप में वह नहीं होता, परन्तु गुणों द्वारा उसको उसी नाम से पुकारा जाता है. जिस तरह यीशु के आने पर यहूदियों ने ये प्रश्न किया था कि तेरे से पहले एलीया ने आसमान से आना था तो यीशु ने इनको उत्तर दिया कि ये युहन्ना एलीया ही तो है. जो मेरे से पहले आया है. इसी तरह हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को एलीया का नाम दिया गया है. परमात्मा ने, हर कौम और हर इलाक़ा और हर ज़माना में अपने अवतार प्रकट किये हैं. और इस की गवाही खुद कुर्आने करीम भी देता हैं खुदा कुर्आन में फ़रमाता है :

وَإِنْ مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ (سورة فاطر آيت ٢٥)

"अर्थात-, और कोई कौम ऐसी नहीं जिसमें खुदा की तरफ़ से कोई होशियार करनेवाला न आया हो"

(सुर फ़ातिर ३/२५)

इसी तरह एक और जगह फ़रमाता हैः

"व लेकुल्ले क़ौमिन हाद." وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ (الرعد ٨)

(सुर अर्राद १/८)

अर्थात, और हर एक क़ौम के लिए (खुदा की तरफ से) एक रहनुमा (रास्ता दिखानेवाला) (भेजा जा चुका) है.

इसी तरह सूरे नहल में फ़िर आया है.

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا (النحل ٣٠)

अर्थात, और हमने यकीनन् हर क़ौम में कोई न कोई रसूल भेजा है.

(सूरे नहल ५/३७)

कुर्आने करीम की इन आयात से स्पष्ट होता है कि परमात्मा ने हर ज़माना में हर क़ौम में कोई न कोई रसूल ज़रुर भेजा है. फिर प्रश्न यह पैदा होता है कि सब कौमों की तरफ आनेवाले रसूलों (अवतारों) का ज़िक्र क्यों नहीं मिलता. इस बात को भी परमात्मा ने कुर्आने करीम में ही हल फ़रमा दिया है. खुदाताअला कुर्आने करीम में कहता है :

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ
نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ، (النساء ١٦٥)

अर्थात् और कई ऐसे रसूल हैं. जिनकी ख़बर हम इस से पहले तुझे दे चुके हैं और कई ऐसे हैं जिन का वर्णन हम ने तुझसे नहीं किया है.

रसूले करीम सल्ल॰ म ने एक बार बताया कि "दुनियां में एक लाख चौबीस हज़ार अवतार आये हैं " (मिशकातुल मसाअबी, पृष्ठ ५११ प्रकाशित कानपुर, खण्ड २) कुर्आने करीम और आंहज़रत (स.अ.स.)कीइस हदीस की रोशनी में ये पता चलता है दुनियां की हर क़ौम में अवतार आये हैं. यह एक अलग बात है कि सबका ज़िक्र कुर्आन शरीफ़ में नहीं किया गया. हिन्दुस्तान में हजारों साल से मनुष्य मौजूद हैं. और यहां कई कौमें गुज़र चुकी हैं. निश्चयही हिन्दुस्तान में समय समय पर कई अवतार आये होंगे. हमने कुछ नाम पहले बताए हैं. ये हिन्दुस्तान में अवतार की हैसियत से याद किये जाते

हैं. जिन्हें हमें उन अवतारों में शामिल करना होगा जिनका क़ुर्आन में उल्लेख नहीं किया गया.

इस बात का वर्णन करते हुए, हज़रत मौलना मुहम्मद क़ासिम साहब नानोतवी संस्थापक मदरसा दयोबन्द लिखते हैं:-

"क्या अजब है कि जिस को हिन्दु साहब अवतार कहते हैं अपने ज़माना के नबी या वली अर्थात् नायब नबी हों. क़ुर्आन शरीफ़ में भी लिखा है 'मिन हुम मन कससना .' सो क्या अजब है कि हिन्दुस्तान के अवतार भी उन्हीं नबियों में से हों जिनका ज़िक्र आप से नहीं किया गया."

(मुबाहिसा: शाह जहांपुर मध्य मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब और दयानन्द सरस्वती, प्रकाशक: सहारनपुर)

हिन्दुस्तान के अवतारों के प्रकट होने का ज़माना बहुत पहले का बताया जाता है. और जो शिक्षा जितनी पुरानी हो उतने ही अधिक किस्से और कहानियां उसमें लगा दी जाती हैं. श्री कृष्ण जी का ज़माना हजारों साल पुराना है. आपके जीवन के साथ कई ऐसे किस्से जोड़ दिये गये हैं- कि अगर उनको सच्चा मान लिया जाए तो उनसे श्री कृष्णजी का नबीहोना तो दूर एक शरीफ़ इन्सान होना भी साबित नहीं हो सकता. लेकिन श्री कृष्ण की और जितनी भी बातें बनाई जाती हैं, जो आपकी शान को कम करती हैं, वे सिर्फ किस्सों और कहानियों के रुपमें ही मिलती हैं. और वास्तव में आपकी ज़िन्दगी के साथ स्पष्ट रुप में कोई सम्बन्ध नहीं है. जिन बातों को वास्तव में ले लिया गया है उनके पीछे बहुत सी बातें छुपी हुई हैं. उन छुपी बातों को स्पष्ट किये बिना उनको ज़ाहिर में लेना बिलकुल ग़लत है. और यदि उनका कोई अर्थ या कारण न लिया जाए तो सिवाए अवतार की शान को गिराने के कुछ हासिल नहीं होता.

जैसा कि मैंने शुरु में कहा था कि दुनियां में आनेवाले अवतारों की शिक्षा में समानता पाई जाती है. शिक्षा चाहे कितनी भी मिल जुल गई हो लेकिन इसकी वास्तविक्ता कायम रहती है. और हर नबी की असली शिक्षा एक इश्वर को मानना है, यहीकारण है कि बाबजूद इसके कि हिन्दु धर्म में सिवाए अनेकेश्वरवाद के और कुछ देखने को नहीं मिलता. इसके बाबजूद श्री कृष्ण जी की तरफ सम्बन्धित होने वाली पुस्तक गीता में तौहीद (एक अल्लाह की इबादत) की शिक्षा मौजूद है.

"आम मुसलमान श्री कृष्णजी को नबी क्यों नहीं मानते?

आम मुसलमान श्रीकृष्ण जी को नबी अर्थात् अवतार मानने को तैयार इसलिए नहीं होते कि वहां जाहिर में पाई जानेवाली शिक्षा में "तौहीद" का नामो निशान मौजूद नहीं हैं और स्वयं हिन्दुओं में ही आर्य समाज वाले दुसरे संप्रदाय अर्थात सनातन धर्म के बिल्कुल उल्ट विश्वास रखते हैं. यदि आर्य समाज वाले श्रीकृष्ण जी की धार्मिक हैसियत व शान को बिल्कुल नहीं मानते तो दूसरी और सनातन धर्म वाले इन को इन्सानियत से ऊचां मुक़ाम रखने वाले इन्सान करारदेकर खुदा मानते हैं. और उनको अवतार से ऊचां दर्जादेकर उन्हें परस्तिश के योग्य मानते हैं. आज के युग में उनकी पूजा इतनी आम हो गई है कि आम आदमी के लिए उन्हें अवतार का दर्जा देना ही कठिन हो गया है.

किसी भी धर्म के अवतार यानि नबी को जानने के लिए उसकी बुनयादी शिक्षा पर नज़र डालना ज़रुरी है. इस पहलू से जब हम श्री कृष्ण जी की शिक्षा का अध्ययन करें तो वहां पर **एकेश्वरवाद** की शिक्षा पाई जाती है. जैसा कि एक जगह लिखा है :

"ईश्वर ही दुनियां में स्थित है और हर इन्सान में इसका प्रकाश उजागर है. और सारे संसार को अपनी क़ुदरत से चला रहा है, हे अर्जुन, तू सम्पूर्ण तौरपर इसी प्रमात्मा के चरणों में चला जा, जहां तुझे सदा सन्तुष्टि प्राप्त होगी."

(भगवत गीता, अध्याय् १८ श्लोक न: ६१-६२)

श्री कृष्ण जी का एकेश्वर को मानने के प्रमाण में और भी कई उदाहरण दिये जा सकते हैं. परन्तु मैं केवल एक ही उदाहरण देना काफी समझता हुँ. जहां तक वर्तमान युग में श्री कृष्ण जी और रामचन्द्र जी की मूर्तियां बना कर उन्हें पूजने का प्रश्न है तो इसकी शिक्षा वेदों में या फिर भगवत् गीता में कहीं नहीं पाई जाती. इस लिहाज़ से उन अवतारों की मूर्तियाँ बना कर उनकी पूजा स्वयं हिन्दु धर्म की बुनयादी शिक्षा के विरुद्ध है. स्वामी दयानंद जी ने स्वयं भी मूर्ति पूजा के संबन्ध से लिखा है :

"कि देखो बुत परस्ती के सबब श्रीरामचन्द्र, श्री कृष्ण, नारायण् और शिव वग़ैरा की बहुत निन्दा और हंसी होती है. सब लोग जानते है कि वे

बहुत बड़े महाराजा अधिराज और उनकी पत्नियां सीता, रुकमनी, लक्ष्मी और पार्वती वग़ैरा महारानियां थी. परन्तु जब उनके बुत मन्दिर वग़ैरा में रख कर पुजारी लोग उनके नाम से भीख मांगते हैं अर्थात् उनको भिखारी बनाते हैं....... ये उनकी हंसी और निन्दा नहीं तो और क्या है ? इस से अपने मानूनीय बुजरगों की बहुत निन्दा होती है. भला जिस युग में ये मौजूद थे उस समय सीता, रुकमनी, लक्ष्मी और पार्वती को सड़क पर या किसी मकान में खड़ाकर पुजारी कहते कि आओ उनके दर्शन करो और कुछ भेंट पूजा धरो तो सीताराम वग़ैरा उन बे अक्लों के कहने पर ऐसा कभी न करते और न करने देते, जो कोई ऐसा मज़ाक उनका उड़ाता तो क्या उनको सजा दिये बग़ैर छोड़ते ?"

(सत्यार्थ प्रकाश अध्याय् ग्याहरवां पृष्ठ ४५४ से ४५५)

अर्थात् आज श्री कृष्ण जी या राम चन्द्रजी की मूर्तियां बना कर जो पूजा की जाती है वह वास्तव में अपने धर्म की शिक्षा से अज्ञानता का प्रमाण है. वास्तव में मूर्ति पूजा का हिन्दु धर्म की बुनियादी शिक्षा में कोई सबूत नहीं पाया जाता. बल्कि इसकी विरोधता पाई जाती है.

"श्रीकृष्ण मुसलमानों की नज़र में"

क़ुर्आन शरीफ़ के अनुसार हर क़ौम और धर्म में खुदा की तरफ से नबी आये हैं. हिन्दुस्तान के इतिहास में जिन अवतारों का कथन मिलता है उनमें श्री कृष्ण जी को एक विशेष स्थान प्राप्त है. और आप का अवतार होना युगों से प्रमाणित है. वर्तमान युग में हजरत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब क़ादियानी अलैहसलाम ने जब दुनियां के समाने श्री कृष्ण जी के ऊंचे मुकाम का वर्णन किया तो आपका कड़ा विरोध हुआ और कई मुल्लाओं ने सिर्फ इस ऐलान पर ही आप पर कुफ़र के फ़तवे दे दिये थे. और वो ऐलान यह था कि आप फ़रमाते हैं.

"राजा कृष्ण जैसा कि मेरे पर प्रकट किया गया है वह वास्तव में ऐसा कामिल इन्सान था जिसकी नज़ीर (उदाहरण) हिन्दुओं के किसी ऋषि और अवतार में नहीं पाई जाती. और अपने समय का अवतार अर्थात नबी था. जिसपर खुदा की तरफ से पवित्रवाणी होती थी. वह खुदा की तरफ से फ़तह मन्द और इकबाल था. जिसने आर्यव्रत की धरती को पाप से साफ

किया. वह अपने युग का वास्तव में अवतार था. जिसकी शिक्षा को पीछे से बहुत बातों में बिगाड़ दिया गया. वह खुदा की मुहब्बत से पूर्ण था. और नेकी से दोस्ती और बुराई से दुश्मनी रखता था."

(लैक्चर सयालकोट रुहानी खज़ाएन अंक
२० पृष्ठ २२८,२२९)

हजरत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी (अलैहसलाम) के इस दावा की पिछले जमानों में भी प्रमाण मिलते हैं और आज के दौर में भी बहुत से उलेमा ने भी समर्थन किया है. वे लोग जो श्री कृष्ण जी को अपने युग का अवतार नहीं मानते उनको गुजरे हुए विद्वानों और मुहद्दिसीन की बातों पर ध्यान करना चाहिए. इस जगह कुछ प्रसंग दिये जाते हैं जैसेः

सर्व प्रथम मैं हजरत अली (रज़ि. अल्ला अन्हो) का एक प्रसंग पेश करता हूँ. ये एक ऐसी किताब का प्रसंग है जो भिन्न भिन्न विषयों पर लिखी गई है. अतः विभिन्न लोगों के भाविक कथनों का संग्रह है. जिसमें अरबी फारसी के लेखन मौजूद हैं. जिसमें मसनवी मौलाना रूमी' भी लिखी हुई है. ये संग्रह एक प्रमाण पत्र की हैसियत रखता है. इस मे एक जगह पर "नक़ल मन्कूलात हज़रत मौला अली अलैहिस्सलाम" का शीर्षक दे कर ग्यारह शेअरों की एक कविता नकल की है जिसमें दुनियां की जानी जाने वाली कौमें और उनके अवतारों और हादियों (अल्लाह की हदायतवाले) के नाम मौजूद हैं. उसमे ही हजरत कृष्ण का नाम हिन्दुस्तान के संबन्ध से स्पष्ट तौर पर मौजूद है. और इन शेअरों में आप फ़रमाते हैं कि जहां धार्मिक रहनुमा भिन्न भिन्न नामों से आये वे सब मेरे नाम हैं. जैसे इसमें लिखाः

अबुल हसन मयख़वा नादानम् बुलअशर अज़मादेरम् पसमनमूई नामेमन ईं
नस्तगुफ़तम मरतो रा

हिन्दयानम् किशने खॉनंदगिरजे यानम् इतकिया, दर फ़रंगम शबते आओ
दरखता बाबुलिआ

('कलकी अवतार' पृष्ठ ६-७)

अर्थात् मुझे 'अबु-ल-हसन' कहते हैं मेरा मादरी नाम रअबु-ल-अशर' है. इसलिए मैं ही हुँ और ये मेरा ही नाम है. खास तौर पर तुझे बताता हूँ.

हिन्दु जिसे 'कृष्ण' कहते हैं. गिरजा वाले उसे "मुत्तक़ी" कहते हैं और अंग्रेज उसे "शबतिया" कहते हैं और खताला देश के उसे "बाबुलिया" कहते हैं.

इसी प्रकार छठी शताब्दी हिजरी के आरम्भ में लिखी हुई एक पुस्तक "फ़िरदोसु-ल-अम्बिया" है जिसको "दैलमी" ने लिखा है. दैलमी "हदीस़" के लिखने वाले और इतिहासकारभी हैं और इनकी मृत्यु सन् ५०७ हिजरी में हुई थी. उन्होंने "तारिखे-हमदान"में एक हदीस इन शब्दों में लिखी है:

كَانَ فِی الْهِنْدِ نَبِیًّا اَسْوَدَ اللَّوْنِ اِسْمُهٗ کَاهِنًا
(تاریخ ہمدان دیلمی ردیف کاف)

अर्थात् हिन्दुस्तान में एक नबी हुआ है जो सांवले रंग का था और इसका नाम काहिन् था "

काहिन् से मुराद 'कृष्ण कन्हया' है. और हम में से प्रत्येक व्यक्ति "कृष्ण" के "सांवले रंग" से परिचित है. यदि उपरोक्त लिखित वाक्य को हदीस लिखने वाले के विचार के अनुसार हदीस कहना दुष्वार है लेकिन इस की तसदीक कुर्आन-ए-करीम की आयात्

" वलेकुल्ले कौमिन्न हाद वल्लेकुल्ले उम्मतिन रसूलिन" से होती है और ये हदीस़ मकबूलियत के विचार पर पूरी उतरती ह . यही कारण है कि हिन्दुस्तान् में प्रकट होने वाले दसवीं शताब्दी के एक बुजुरग जो इस शताब्दी केमुजद्दिदइमाम भी माने जाते हैं, हजरत सय्यद अहमद साहब सरहन्दी ने भी हिन्दुस्तान में अवतारों के आगमन को माना है. उनकी यह बात भी कुर्आन और हदीस के पक्ष में आती है. जो कि उपर लिखी गई है आप लिखते हैं:

"ودر بعضے از بلادِ ہند محسوس مے گردد کہ انوارِ انبیاء علیہم الصلوٰۃ والتسلیمات در ظلمات شرک در نگِ مشعلہا افروختہ اند" (مکتوبات امام ربانی جلد اوّل مطبوعہ مطبعۂ احمدی دہلی ص ۲۸۴ و مکتوب ۲۵۹)

"यह महसूस होता है कि हिन्दुस्तान के कई मुकामों पर अवतारों ने ज़ुल्म व शिर्क के बुतखानों में मशालें रोशन की थीं."

हजरत मजहर जानेजाना शहीद रहमतुल्लाह ग्यारहवीं व बारहवीं सदी के एक बुजुरग हैं. उनके जीवन के हालात हजरत शाह गुलाम अली साहब रहमतुल्लाह ने अंकित किये हैं जो "मलफूजात" के रुप में हैं. उनकी किताब नम्बर चौहदां मेंध' दरबयान आनीने कुफ़्फारे हिन्द "के शीर्षक से पृष्ठ १२१.में फारसी में अंकित है. जिसका अनुवाद इस तरह है......)

और जानना चाहिए कि आयात-ए-करीमा के हुकुम की रुह से व इम्मिन उम्मतिन इल्ला ख़ला फ़ीहानज़ीर" और दूसरी आयात की रु से.

हिन्दुस्तान के मुल्क़ में अवतार प्रकट हो चुके हैं. और उनके प्रसंग उनकी पुस्तकों में मजबुत तौर पर अंकित हैं. और उनके आसार से स्पष्ट है कि वह रुतबा-ए-कमाल और तबलीग रखते थे. और खुदा की आम रहमत ने उसके बन्दों को सही रास्ते परलाने वालों को इस बड़े मुल्क में नजर अन्दाज़ नहीं किया.

हजरत मजहर जाने जाना रहमतुल्लाह की ज़िन्दगी का एक और वाकया भी हजरत शाह गुलाम अली साहब ने बयान किया है वह इसतरह है एक व्यक्ति ने एक सपना (ख्वाब) देखा और अपने ख़्वाब का जिक्र हजरत मजहर जाने जाना के सामने किया और आपने उस ख़्वाब के अर्थ बताए जो इस प्रकार हैं :

"एक दिन एक व्यक्ति ने आप से अर्ज़ किया मैंने ख़्वाब में देखा है कि जगंल आग से भरा है और (हजरत) कृष्ण आग के मध्य में हैं. और (हजरत) राम चन्द्र उस आग के किनारे पर हैं". एक व्यक्तिने उस ख़्वाब की ताबीर (अर्थ) ये बताई कि राम और कृष्ण बहुत बड़े काफ़िर थे (अल्लाह मुआफकरे) और नर्क की आग में सजा पा रहे हैं. फक़ीर ने कहा इस ख़्वाब के अर्थ और हैं पहले लोगों में से किसी विशेष व्यक्ति का जबतक धार्मिक नियम के अनुसार उसका कुफ्र प्रमाणित न हो, उसके सम्बन्ध में कुफ्र का फ़तवा देना उचित नहीं इस लिहाज से, किताब और सुन्नत के एतबार से ये फ़तवा गलत है. व इम्मिन उम्मातिन इल्लाखला फीहा नज़ीर. और इस आयते शरीफ के अनुसार स्पष्ठ है कि इस जमाअत में भी खुशखबरी देने वाले और सावधान करने वाले गुजरे हैं. और इस बात से ये अनुमान होता है कि ये लोगवली (खुदा के दोस्त) या अवतार हों

रामचन्द्र जी, जिनका जन्म आरम्भिक युग में हुआ, और उस समय आयु लम्बी व शरीर शक्तिशाली होते थे, ने अपने ज़माने के लोगों का उचित रुपसे सुधार किया. हजरत कृष्ण इन प्रतिष्ठित लोंगो के अन्तिम दौर में प्रकट हुए थे. उनके जमाने मे लोगों की आयू व शक्ति पहले के मुकाबिल पर कम थी. उन्होंने अपने जमाने के लोगों की इसी भावना के अनुसार रहनुमाई की. उनसे संबंधित बहुत सी कवितांए व सुनीहुई बातें हैं जो उनकी प्रेमभावना से समानता रखती है. हजरत कृष्ण जो कि प्रेम अवस्था में निमग्नता रखते थे, उन का शरीर अग्नि के मध्य में होने से स्वभाविक है और रामचन्द्र जो विभिन्न चरित्र रखते थे वह आग के किनारे पर दृष्टिगोचर हुए वल्लाहो आलम."

(हालात हजरत मज़हर जाने जाना रहमतुल्लाह, संकलन हजरत शाह गुलाम अली साहब रहमतुल्लाह प्रकाशक मतबाऐ अहमदी १२६९ हिजरी पृष्ठ २६)

हजरत गुलाम अली शाह साहब ने पत्र चार दहम बा उनवान "दर बयान आनीने कूफारे हिन्द" किताब के पने २६ पर एक रिवायत दर्ज की है जो अब्बु सालेह खान साहिब की है. लिखा है कि वो मथुरा गऐ हुऐ थे उनको सात रुपयों की ज़रुरत पेश आई एक रात जब वो तहाजुद अदा कर रहे थे एक व्यक्ति कृष्ण जी की शक्ल में जिस तरह कि हिन्दु कृष्णजी के बारे में ब्यान करते हैं प्रकट हुआ और बाद सलाम के इसने सात रुपये पेश किये. मैं ने कहा कि ठहरो जरा में .नमाज़ अदा कर लूँ. .नमाज़ अदा करने के बाद मैनें पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है ? इसने ने कहा कि कृष्ण और यह सात रुपये तुम्हारी अतिथ्या (महमाननवाज़ी) के हैं कि तुम मेरे स्थान पर आये मैंने कहा कि मैं मुहम्मदी हूँ और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लाहो अल्यहे वसलम हमारे पैग़बर हमारी सारी अवश्यकताओं को पूरा करनेके लिए काफी हैं. मैं दूसरों की भेंट स्वीकार नहीं कर सकता वो व्यक्ति रोया और कहा कि :

"ما وصف نبی آخر زماں و اخلاص اتباع او صلی اللہ علیہ وسلم شنیدہ بودیم زیادہ

از آں مشاہدہ کردیم"

अर्थात - हमने आख़री युग के नबी की तारीफ और आंहज़रत सल्लुलाहो अलैहे वसल्लम की पैरवी की बरकतों के बारे में सुना हुआ था इससे बढ़ कर हमने उनका अवलोकन किया है.

इस घटना से जहां एक तरफ़ आंहज़रत सल्लाहो अलैहे वसल्म और आपके अनुयाईयों के मुक़ाम का पता चल्ता है. वहीं दूसरी तरफ हजरत कृष्ण जी की आंहजरत सल्लुलाहो अलैहे वसल्लम से अथाहप्रेम और श्रद्धा भी स्पष्ट होती है.

मौलाना गौस अली शाह पानी पती रहमतुल्ला की गिन्ती भी सूफ़ियों में होती है. और आपका सम्बंध तेहरवीं सदी से है. आपके मलफ़ूज़ात (कथनों) में आपका एक स्वप्न अंकित है. इस स्वप्न का पसे मन्जर पेश करते हैं कि एक हिन्दू पंडित के कहने पर मैं ने ब्रह्म गायत्री का पाठ किया इस पाठ के कर चुकने के बाद फ़रमायाः

"जिस रोज हम पाठकर चुके तो आख़री रात मे यह सपना देखा कि ऐन दरिया गंगा में एक तरफ ख़्रात मुर रसूल जनाब सरवरे कायनात खुलासाऐमोजूदात फ़खरे खानदाने आदम रहमते आलम बाऐसे इजादे अरज़ोसमा सपेहदारे लशकरे अमबेया अहमेद मुजतबा मुहम्मद मुसतफ़ा सल्लाहो अल्यहे वस्सलम सहाबा करामके साथ तशरीफ लाऐ और एक महफिल सजी. दूसरी तरफ महाराज श्री कृष्ण जी अपने साथियों के साथ विराजमान हुऐ

और एक सभा जम गई. श्री कृष्ण जी ने आंहजरत सल्लुलाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज किया कि आप इनको समझाऐं यह क्या करते हैं. हजरत ने कहा कि महाराज तुम ही समझाओ फिर महाराज ने मुझको बुलाया और कहा कि सुनो बर खुरदार तुम्हारे यहां क्या कुछ नहीं जो दूसरी तरफ ढुंढते हो. क्या तुमने अलग समझा है यहाँ और वहां सब एक बात है."

("तज़करा गोसीया" मल्फ़ुज़ात पृष्ठ ४८ प्रकाशक मुजताबाई दिल्ली १९११)

मौजूदा जमाने के सूफ़िया में ख़्वाजा हसन नज़ामी साहेब का बड़ा स्थान है. आपने भी पूर्वज सूफ़िया कराम की तरह श्री कृष्ण जी को अवतार माना है. और आपने "कृष्ण बीती" के नाम से एक किताब लिखी है. इसमें आप लिखते हैं :

"श्री कृष्ण भी हिन्दुस्तान के हादी थे इनको भी एक बड़ी और आला कौम की रहबरी पर मामूर किया."

(कृष्ण बीती पृष्ठ ३९)

फिर लिखा है :

"श्री कृष्ण की ज़ात वास्तव में ईश्वर की ओर से दुश्मनों की तबाही और बरबादी के लिए प्रकट हुई थी."

(कृष्ण बिती, पृष्ठ : ९१)

इस तरह श्री कृष्ण जी महाराज को संबोधित करते हुऐ लिखतें है:

"सलाम तुझ पर ऐ गरीब ग्वालिन की गोद ठंडी करने वाले, सलाम तुझ पर ऐ गुमनामों के नाम को चार चाँद लगाने वाले, ऐ वो जो एक गरीब दूध वाली की गोद में फ़ूलों की सेज से ज्यादा आराम में पाँव फैलाए सोता है. तुझ पर हजारों सलाम."

("कृष्ण बीती" पृष्ठ २२)

मौलवी मुहम्मद अजमल खान साहिब एम ऐ अपनी किताब "नगमा-ऐ- खुदाबन्दी" में मौलवी अब्दुल बारी साहिब मरहूम का एक वर्णन दर्ज करते हुऐ लिखते हैं.

"हज़रत मौलाना अब्दुल बारी रहमातुला अलैहे ने भी अक्सर फ़रमाया है कि श्री कृष्ण जी के जो हालात हैं उनको देखते हुऐ पता लगता है कि होसकता है वो हिन्दुस्तान के नबी हों इसलिए कि स्पष्ट रुप से ले कुल्ले कौमिन हादि आयते करीमा का नज़रिया बताता है कि हर देश और कौम में एक नबी ज़रुर भेजा गया है. और हिन्दुस्तान का इस दृष्टिकोण से आज़ाद

रहना बुद्धिके विपरीत है. हो सकता है यही वजह है कि अक्सर प्रतिष्ठित लोगों ने ऐसे स्थानों पर ख़सूसियत से इबादत और चिल्ला कशी की है जहाँ हिन्दुओं के पवित्र स्थान हैं.''

(नग़माऐ ख़ुदावन्दी, पृष्ठ २०)

मौलवी वहीदुज ज़मान ख़ान साहिब शाहजहानपूरी तफसीरे वहीदी में आयते क़ुर्आनी

की तफसीर में फ़रमाते हैं।

''इस आयत से ये अर्थ निकलता है कि हर देश और हर कौम में खुदा के पैंगमबर गुज़र चुके हैं और बहुत से पैगमबरों का ज़िक्र ख़ुदा ने क़ुर्आन शरीफ में नहीं फ़रमाया है. इस लिए मुसलमानों को किसी कौम के पैगमबरों का इन्कार नहीं करना चाहिऐ ख़ुदा ताला ख़ूब जानता है कि वो पैगमबर थे या ना थे. '' मैं अल्लाह ताअला पर और उसके सब नबियों पर इमान लाता हूँ '' कहना चाहिए.

(तफसीरे वहीदी मतबुआ मतबउलक़ुर्आन वसुन्ना वाक्य अमृतसर पृष्ठ ६४३ हाशिया न२)

मौलवी ज़फर अलीख़ान साहब एडीटर जमिन्दार लाहौर लिखते हैं:

''कोई क़ौम और कोई देश ऐसा नहीं जिस की बुराईयों के सुधार के लिए परमात्मा ने अपने नेक बन्दों में से खास खास समयों पर कोई अपना प्रतिष्ठित नबी या रसूल या मामूर के तौर प्रकट न किया हो. श्री कृष्ण नबियों के इसी विश्वव्यापी सिलसिले से संबंध रखते थे.''

(अखबार 'प्रताप' लाहौर का 'कृष्ण नम्बर २८ अगस्त १९२९)

मौलाना फज़ल-र-रहमान साहब फ़रमाते हैं :

हिन्दुओं की कौम में रामचन्द्र और श्री कृष्ण जी पैग़म्बर गुज़रे हैं और ये सब एकईश्वरवादी थे.

एक दूसरे स्थान पर (मौलाना वहीदु-ज़-ज्मान खां) फ़रमाते हैं :

''क़ुर्आन में पैगम्बरों का हाल अंकित है. इन के सिवा प्रत्येक देश और विलायत (विदेश) में अल्लाह के पैग़म्बर आ चुके हैं. और लोगों को एक ईश्वरवाद और अच्छी बातों की हिदायत दे चुके हैं. इसलिए हमारे लिए आवश्यक है कि अगले लोगों में से चाहे वे किसी कौममेंसे गुज़रे हों उदाहरणत: हिन्दुओं या पारसियों में या चीनियों या यूनानियों में या रोमियों में जिनके लिए ये प्रमाणित हो कि वे एकइश्वरवादी है. किसीकी पैगम्बरी का इन्कार न

करें और यूँ कहें कि हम सब अल्लाह के पैगम्बरों पर इमान लाऐं. मौलाना फज़लु-र-रहमान साहव और मौलाना शाह अबदुल अजीज साहब ने फ़रमाया कि हिन्दुस्तान में जो पवित्र और नेक लोग गुजरे हैं जैसे रामचन्द्र जी या कृष्ण जी, हम को उनकी बुराई नहीं करनी चाहिए शायद वे अल्लाह के पैगम्बर हों.''

(तफ़सीर वहीदी, पृष्ठ ७०३, ज़ेरे आयात, ''वालाक़द अरसलना रोसोलम्]मन क़बलिक........'' हाशिया नम्बर ४)

इसी प्रकार मौलाना सय्यद अखतर मौहानी ऐडीटर ''जाम जहांनुमा'' लखनऊ का एक नोट ''कृष्ण और इस्लाम'' शीर्षक के अधीन अख़बार तेज ''कृष्ण नम्बर'', तिथि १० अगस्त १९३६ में प्रकाशित हुआ था जिसमें लिखा है कि:

''मेरे ख़्याल में वह (कृष्ण जी) प्रतिष्ठित अवतार थे और दुनियां की राह नुमाई के लिए परमात्मा की ओरसे प्रकट हुए थे इनकी प्रतिष्ठा और सम्मान संसार के हर व्यक्ति पर एक समान ज़रुरी है.''

हिन्दु मत की पुस्तकों में एकईश्वरवाद

श्री कृष्ण जी महाराज के सम्बन्ध में मुसलमानों के विचारों की स्पष्ट रुप में छाया पाई जाती है. कितने ही मुस्लिम शायर हैं जिन्होंने कृष्ण जी के सम्बन्ध से शेअर कहे हैं. मुसलमानों में जितने भी अल्लाह के नेक बन्दे गुज़रे हैं, जिन्होंने श्री कृष्ण जी को नबी माना है, वे सब के सब आपको एकईश्वरवादी मानते थे. आप एक खुदा की इबादत करते और एकईश्वर की इबादत करने की शिक्षा देते. जिसकी मिसाल आरम्भ में पेश की जा चुकी है. ऐसेहीदो हवाले और पेश कर देना अवश्यक समझता हूँ. भगवत गीता में लिखा है:

गतिर्भर्ता प्रभु साक्षी निवासा शरणं सुहुत । प्रभवा प्रलय स्थान निधान बीज मव्ययम् ॥

(भगवंत गीता अंक १-१८)

अर्थात वह परमात्मा इन्सान के जीवन का लक्ष्य है वह रब्ब है. वह मालिक है. वह गवाह है. वही शरण देनेवाला है. वही वास्तविक मित्रै है. वह

आरम्भ भी है और अन्त भी. वह ख़ज़ाना है वह जीवित और कायम रहने वाला है.

इसी प्रकार फ़रमायाः

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोक महेश्वरम् । असंमूढ स मर्त्येषु सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥

(भगवत गीता १०:३)

अर्थात जो व्यक्ति मुझे आरम्भ और अन्त और पैदा न होनेवाला और सभी लोकों का पालनहार समझता है वह इन्सानों में जाहिल नहीं है. ऐसा व्यक्ति हर पाप और गुनाह से मुक्तिप्राप्त है.

जनाब मौलवी मुहम्मद अलीसाहब मुगेंरी लिखते हैंः

"हजरत से पूर्व ये लोग (कृष्ण और रामचन्द्र) मुसलमान थे"

(रसाला इरशाद रहमानी व फजले यजदानी प्रकाशन प्रथम पृष्ठ ४०)

मुसलमान वह है जो एकईश्वरवाद पर कायम हो और ये बात दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट है कि ये हजरात एकेश्वरवादी थे. अर्थात बुनियाद तौहीद थी और हिन्दु धर्म की पहली सीढ़ी थी, और है बिलकुल उसी तरह जैसे किसी विद्यार्थी के लिए पहली सीढ़ी प्रथम क्लास होती है. लेकिन ध्यान दें क्या वह बच्चा उसी कलास में बैठे रहना पसन्द करता है या फिर उसके माता पिता अपने बच्चे को उसी क्लास में बिठाए रखना पसन्द करते हैं. कभी नहीं पहली क्लास तो बुनियाद होती है. लेकिन वह आगे उन्नति का स्त्रोत बनती है. यही कारण है कि हर पहले धर्म की वास्तविक शिक्षा बाद के धर्म की वास्तविक शिक्षा में शामिल है. जैसे पहली दूसरी तीसरी और इसी तरह ऊपर की सभी कलासों की शिक्षा का वास्तव उससे बड़ी कलासों में मौजूद होता है. जहां तक हिन्दुओं के इस दावा का प्रश्न है कि उनका मजहब ही सबसे पुराना है. जिसको मैं पहली कलास से भाव ले रहा हूँ. मुझे इसका प्रमाण देने की अवश्यकता नहीं क्योंकि यह मुद्दई का अपना दाअवा है. फिर भी एक बात अपने पाठकों के सामने पेश कर देना जरुरी समझता हूँ वह ये कि जब हम हिन्दु भाईयों से ये कहते हैं. कि जब आपके धर्म की बुनियाद तौहीद (एकईश्वरवाद) है जैसा कि वेदों और गीतासे प्रमाणित है तो फिर आप मूर्ति पूजा क्यों करते हैं ? तो उनका उत्तर ये होता है कि हम मूर्ति को इसलिए सामने रखते है. ताकि हमारा ध्यान एक जगह केन्द्रित रहे. मैं अपने भाईयों से ये दरख़्वासत करनी चाहता हूं कि माशाअल्लाह अब तो आप दुनियांदारी के मामलों में बहुत शिक्षित हैं धर्म के मामले में भी अपने आप को आगे बढायें और पहली कलास के बच्चे की हालत को छोडकर जो तस्वीर को देखकर

शब्दों को याद करता है उपर उठें आपके लिए इससे उपर उठ कर भी खुदा की हस्ती को आसानी से पाने के ढंग मौजूद हैं. अब आपको चाहिए कि अनेकेश्वरवाद को छोड़कर एकेश्वरवाद की ओर वापस आऐं. उस एकेश्वरवाद की ओर जिसे श्री कृष्ण जी ने कायम किया था, जिस को श्रीरामचन्द्रजी ने कायम किया था. यदि आप श्री रामचन्द्र और श्री कृष्णजी महाराज के अनुयायी हैं तो अवश्य ही आपको शुद्ध एकेश्वरवाद की तरफ वापिस आना होगा.

जहां तक हजरत कृष्ण जी और श्रीरामचन्द्र जी की शिक्षा का प्रश्न है तो वह एकेश्वरवाद पर अधारित थी. लेकिन बाद में शनैः शनैः उनमें इस तरह बिगाड़ पैदा हुआ कि जड़ जो एकेश्वरवादी थी बिल्कुल गायब हो गई और इसकी जगह पूरी तरह अनेकेश्वरवाद ने ग्रहण कर ली. वर्तमान समय में भी श्री कृष्ण जी से प्रेम करनेवाले करोड़ों मौजूद है. परन्तु कोई नहीं जो एकेश्वरवाद की बुनियादी शिक्षा को लोगों के सम्मुख रखे जो श्री कृष्ण जी लेकर आये थे. यही कारण है कि जो लोग श्री कृष्ण की एक खुदा की शिक्षा से परिचित नहीं और वे स्वयं एकेश्वरवादी हैं, श्री कृष्ण जी को नबी मानने को तैयार नहीं हैं क्योंकि एकेश्वरवाद की जगह मूर्ति पूजा ने ले ली है.

किस्से कहानियाँ और कृष्ण जी

पाठको, वे लोग जो सही ज्ञान रखते हैं उन्होंने समय समय पर लोगों को इस बात से परिचित कराने की कोशिश की है. कि वह काम और वे बातें जो किस्सों और कहानियों की शक्ल में उनसे संबधित की जाती हैं. उनको ग़लत कहा है. और जहां तक सम्भव हो सका उनके दामन को ऐसी बातों से पवित्र करने की कोशिश की है जिनसे उनकी शान पर धब्बा आता है. यदि गहरी दृष्टि से देखा जाए तो उन बुलन्द और उच्च हस्तियों को अफसानों के भंवर में डालकर उनकी शान को अलोप कर दिया गया है. इसी बात को बयान करते हुए जनाब मौलवी शिबली नोमानी लिखते है:

"हिन्दुस्तान के पैग़म्बर अफसानों के हिजाब में गुम है."

(सीरतुल नबी जिल्द१, पृष्ठ २)

इसीतरह जनाब मौलवी उबैदुल्लाह साहब तोहफ़ा-तुल-हिन्द में लिखते हैं:

"हो सकता है कि इस देश (हिन्द) में परमात्मा की तरफ से कई अवतार प्रकट हुए हों ....क्योंकि गुमान है कि शायद ये बातें जो उनकी निस्बत उनकी पोथियों में लिखी हैं झूठ हैं,"

(रसाला तोहफ़ा-तुल-हिन्द, पृष्ठ ६)

इस बात में भी शक नहीं कि स्वयं कृष्ण जी और रामचन्द्र जी के माननेवालों ने उनकी तरफ ऐसी बातें संबंधित की हैं. जिन से उनका अपमान और शान में कमी होती है. इस्लाम के अध्यात्मवादी जिन्होंने इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों को "नबी" करार दिया. और लोगों के सामने उनकी नबुव्वत को पेश किया वे इस बात को कभी सहन नहीं करते कि कोई उनकी शान में गुस्ताखी करे. और ऐसी घटनाएं और कथाएं उनसे संबंधित करे जिन से उनका मुक़ाम गिर जाए. और उनका ये अमल ठीक कुआर्नि करीम के अनुसार है जैसा कि कुर्आन में बयान फ़रमाया है.

"لَانُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا۔

(البقرۃ آیت ۲۸۶)

अर्थात वे लोग (मोमिन) रसूलों में से एक दूसरे के मध्य फर्क नहीं करते. और वे ये कहते हैं कि हमने सुन लिया और हम ने स्वीकार कर लिया.

(सुरःबक़रा आयत २८६)

यही कारण है कि कोई भी मुसलमान किसी नबी के अपमान को सहन नहीं करता क्यों कि वे सभी अवतारों को अपना मानते हैं. इसीलिए मुसलमान आलिमों और लेखकों ने श्री कृष्णजी से सम्बंधित की जानेवाली बातों को स्वीकार न करते हुए उनकी व्याख्या करने की कोशिश की है. और गलत क़िस्म के इल्जामों से आपके दामन को पाक करने की कोशिश की है.

जनाब क़ैफी साहब चिड़ियाकोटी ने "वकाऐ आलमगीरी" नामे किताब का मुकद्दमा लिखा जो कि शहनशाह औरंगजेब आलम गीर के हालात पर निर्धारित है इसमें उन्होनें मौलवी अनायत रसूल साहब चिड़ियाकोटी का एक वर्णन अंकित किया है लिखा है:

"श्री कृष्ण जी जो बहुत ही सतर्क और तपस्वी बुद्धिमान दार्शनिक थे. उनकी तस्वीर कई इतिहासकारोंने ऐसी खींची है, बृज और गोपियों के सम्बन्ध से ऐसे ऐसे अफ़साने तराशे हैं कि कृष्ण जी का सफेद दामन बिलकुल काला नजर आता है. हांलाकि मुसलमानों का एक तबका उनको नबी मानता है. हमारे ख्याल में भी मौलाना अनायत रसूल चिड़ियाकोटी उस्ताद सरसय्यद

के कहने के अनुसार वे नबी थे. इस पर आयत "ले कुल्ले कौ मिन हाद" दलील बन सकती है.

(वकाऐ आलमगीर, पृष्ठ हे ५)

इसी तरह मौलवी मुहम्मदक़ासिम साहिब नॉनोतवी एक जगह फ़रमाते हैं :

"रहो यह बात कि यदि हिन्दुओं के अवतार, अम्बिया याऔलिया होते तो ख़ुदा होने का दावा न करते और न किये जानेवाले काम जैसे व्यभिचार, चोरी, वगैरा न करते. हालांकि अवतारों के श्रद्धालू अर्थात हिन्दु इन दोनों बातों को मानते हैं. जिस से ये प्रमाणित होता है कि ये दोनों बातें निःसन्देह इनसे जोड़ी हुई हैं इसलिए इस शक का उत्तर ये हो सकता है कि जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तरफ दावा ख़ुदाई ईसाईयों ने संबधित कर दिया है और अक़ली और नक़ली प्रमाण इसके विरोध में हैं ऐसे ही इसमें क्या आश्चर्य है कि श्री कृष्ण व श्रीरामचन्द्र की ओर भी ये दावा झुठे तौरपर सम्बंधित कर दिया हो."

(मुबहिसा शाहजहानपुर, प्रकाशन सहारनपुर मौलाना कासिम साहब व दयानन्द सरस्वती, पृष्ठ ३१)

प्रिय पाठको, धर्म और अवतारों का इतिहास ऐसा ही है जैसे जैसे समय गुज़रता जाता है वैसेही धर्म में परिवर्तन होता जाता है फिर अवतारों पर इल्ज़ाम तो उनके अपने जीवन में ही लग जाते हैं. और फिर धीरे-धीरे नये नये इल्ज़ाम उनसे सम्बन्धित होते चले जाते हैं. श्री कृष्ण जी की जिन्दगी पर जिस प्रकार के दोष लगाए जाते हैं. बुद्धि उनको सच्चा मानने और मानवीय प्रकृति उसे कबूल करने को तैयार नहीं होती क्योंकि जो परमात्मा का प्रिय हो और दुनियां के सुधार के लिए ख़ुदा ने उसे नियुक्त किया हो वह ऐसे काम करे जिसे कोई व्यक्ति भी अपने साथ सम्बंधित होना गवारा न करता हो तो उस अवतार के लिए वैसा करना क्यों कर उचित हो सकता है. ऐ कृष्ण से प्रेम करने वाले !! क्या तुम्हारे प्यार की यही अभिलाषा है कि तुम अपने प्यारे पर गन्द और कीचड़ उछालते हो. प्रेम करने वालों के प्यार का नतीजा तो ये होता है कि अगर अपने प्रिय से कोई गलती घटित हो भी जाए तो वह उसे छुपाता है. और तुम हो कि अपने सबसे प्रिय अवतार पर उन दोषों को लगाकर खुश होते हो. और गर्व के साथ चित्रों द्वारा दुनियां वालों के सामने पेश करते हो. आप तो ये कर सकते हैं. लेकिन हमें ये बात पसन्द नहीं. हमारे निकट ये प्रतिष्ठित व्यक्ति एक सम्मानित स्थान रखते हैं. हम तो हर पल उनके सम्मान और प्रतिष्ठा को बुलंद करने की कोशिश में हैं.

श्री कृष्ण जी की तरफ लगाऐ जाने वाली घटनाएं एक इल्ज़ाम का रंग रखती हैं और कई घटनाओं की तो व्याख्या ज़रुरी है. यदि हम उन स्पष्टताओं को कबूल करलें तो श्री कृष्ण जी उन सभी दोषों से बरी ही नहीं हो जाते बल्कि आपको एक उच्च और बुलंद मुकाम मिल जाता है.

जनाब नवाब अकबर यार जंग बहादुर एडवोकेट इसी बात को बयान करते हुए एक जगह लिखते हैं :

''गोपियों की इश्क़बाजी का मशहूर किस्सा और बांसुरी की सुरीली आवाज से उनको मस्त कर देने की घटना इस कदर मशहूर है कि इसको छुपाने या इससे इन्कार करने की बजाए आम तौर पर उन को कृष्ण जी की विशेषताओं में शामिल किया जाता है. यदि उन घटनाओं को हिन्दुओं की प्राचीन मैथॉलोजी मान लिया जाए और उनके ऐसे उचित अर्थ और स्पष्टता की जाए जो एक धार्मिक सुधारक की शान और सम्मान के अनुसार हो. तो निःसन्देह गोपियों की इश्कबाजी का किस्सा और बांसुरी की सुरीली ताने इन उचित अर्थों के पश्चात् हजरत कृष्णजी की विशेषताओं में शामिल की जा सकती हैं.''

(कलकी अवतार, पृष्ठ २५)

श्री कृष्ण पर लगने वाले आरोप और उनकी वास्तविक्ता

इस जगह मैं उचित समझता हूं कि उन घटनाओं को बयान करुं जो श्रीकृष्ण जी से संबंधित की जाती हैं जिन से आपकी शान में कमी होती है और साथ हीउनकी वास्तविक्ता भी बयान करुं जो मेरे निकट हो सकती है. जिस से आपकी विशेषताएं सामने आती हों और आपका दामन भी आरोपों से पवित्र होता हो.

माखन चोर की वास्तविक्ता

हजरत श्री कृष्ण जी महाराज पर जो सबसे पहला आरोप लगाया जाता है वह आपके बालकीय जीवन पर है कि आप मक्खन चोरी किया करते थे. जिसके कारण हजरत श्री कृष्णजी को माखन चोर कहते हैं. मेरी कई लोगों से बात हुई है. उनसे प्रेम करनेवाले कह देते हैं कि ये तो बचपन की

घटना है और बच्चे बचपन में ऐसा कर लेते हैं कोई हर्ज की बात नहीं. लेकिन श्री कृष्ण प्रेमियों को यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि चोरी चोरी ही होती है और फिर बचपन में चोरी की आदत पड़ जाए तो बड़े होकर कब जाती है.

कृष्ण प्रेमी तो गर्व से माखन चोर कह कर पुकारते हैं. पाठको ! ज़ीरा को चुराने वाला भी चोर कहलाता है. और हीरेकी चोरी करनेवाला भी चोर कहलाता है. चोरी एक दोष है. इसको अवतारसे संबंधित नहीं किया जा सकता. परमात्मा के अवतार ऐसी बातों से पवित्र होते हैं और हज़रत कृष्ण इन ही लोगों में से थे जिन्होंने परमात्मा की मुहब्बत का दूध पिया था. इसलिए आप से संबंधित होने वाली ये घटना स्पष्टता के काबिल है.

जैसा कि मैंने आरम्भ में लिखा था कि परमात्मा की तरफ से हर ज़माना में अवतार आये और परमात्मा की तरफ से लोगों के सुधार के लिए भिन्न भिन्न समयों में भिन्न भिन्न शिक्षाएं ले कर आये और ज़माना गुज़रनेपर लोगों ने उनमें परिवर्तन कर दिया. फिर परमात्मा ने दूसरे अवतार को प्रकट किया जो भूतपूर्व अवतार की असल और कुछ नयी शिक्षा खुदा की तरफ से लाया और उस के ज़माना में पाई जानेवाली शिक्षा को इस ने इधर उधर की बातों से शुद्ध किया. हज़रत कृष्ण जी महाराज ने भी अपने ज़माना में यही काम किया आपने पिछली किताबों से सही शिक्षा लेकर लोगों के सामने पेश की और इधर उधर की जो बातें लोगों ने इसमें मिलादी थीं उसको छोड़ दिया अर्थात आप ने इस ज़माना की शिक्षा को मथ कर इसमें सें शुद्ध शिक्षा निकाल कर जो मक्खन की तरह थी लोगों के सामने पेश की.

स्नान करती स्त्रियों के वस्त्र उठाने की वास्तविकता

दूसरा एक बड़ा आरोप जो हज़रत कृष्ण जी के जीवन पर लगाया जाता है और जिसको यदि ऐसे ही मान लिया जाए तो आप निचले दर्जे के लोगों में शामिल होंगे. वह यह है कि एक बार कुछ औरतें तालाब में नहा रही थीं तो श्री कृष्ण जी आये और उन औरतों के वस्त्र लेकर एक वृक्ष पर चढ गये. जब उन औरतों को इस बात का ज्ञान हुआ कि हमारे कपड़े श्री कृष्ण जी ले गये हैं तो उन्होनें श्री कृष्णजीसे कपडे मांगे. इसपर श्री कृष्ण जीने उन से कहा कि तुम बारी बारी नंगी ही निकल कर मेरे पास आओ तब मैं तुम को वस्त्र दूंगा. आज के सुसभ्य दौर में ऐसी तस्वीरें देखने को मिलती हैं कि श्री कृष्ण जी दरख़्त पर बैठे हैं और औरतें पानी में नंगी खड़ी उन से कपड़ों की निवेदन करती हैं. आज के दौर में यदि कोई ऐसा करे तो अवश्य ही जेल में जाएगा, और उसको सज़ा दी जाएगी और समाज में भी लोग उसे बुरी नजर से देखेंगे. तो फिर ये कैसे सम्भव है कि परमात्मा का अवतार ऐसी हरकत करता जो परमात्मा और उसके बन्दों के नज़दीक बुरी है.

हमारे निकट इस घटना में भी बड़ी गहरी फिलासफी पाई जाती है जिसको गलत रंग में तस्वीरी जुबान में पेश कर दिया गया है. वास्तविकता ये है कि वे औरतें जो निःवस्त्र नहाती हुई दिखाई गई हैं वे वास्तव में श्री कृष्ण जी के शिष्य हैं जिन पर से आपने गन्दगी के वस्त्र उतारे और पवित्र शिक्षा जो पानी की शक्ल में दिखाई गई है उनको नहलाया बाद में उनको अच्छे और साफ वस्त्र दिये गये जो संयम से पूर्ण थे. और असल वस्त्र संयम ही है इसका ज़िक्र कुर्आने करीम में भी मौजूद है. खुदा कुर्आने करीम में बयान फ़रमाता है:

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۗ
وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۗ (الاعراف آيت ٢٧)

अर्थात् ऐ आदम की औलाद !! हम ने तुम्हारे लिए एक ऐसा लिबास पैदा किया है जो तुम्हारी छुपाने वाली जगहों को छुपाता है और शोभा का कारण भी है और संयम (तक़वा) का लिबास तो सबसे बेहतर लिबास है.

(सुरः अल् आराफ २/२७)

भावार्थ यह कि अवतारों का काम ही तक़वा (सयंम) को कायम करना है. इसलिए श्रीकृष्ण जी के लिए भी ये आवश्यक था कि वे लोगों को तक़वा के वस्त्र पहनाते. आपने भी वास्तव में वही वस्त्र उन लोगों को दिये जो तक़वा (संयम) के वस्त्र से अज्ञात और बिल्कुल नग्न थे.

इस घटना में श्री कृष्ण जी को जो वृक्ष पर बैठा दिखाया गयाहै वह आप की बुलन्द शान को दर्शाता है. और बुलन्द मुकाम उसी को हासिल होता है जो मुत्तक़ी (संयमी) हो जिसका कुर्आने करीम कि आयत

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقَاكُمْ (الحجرات آيت ١٤)

में इशारा पाया जाता है कि तुम में से अल्लाह के निकट सबसे से अधिक सम्मान के योग्य वह है जो सबसे अधिक संयमी है. तो फिर क्या खुदा के अवतारों के लिए इस मुक़ाम को हासिल करना कोई मुश्किल काम है. इसलिए ये घटना जो हमारे श्री कृष्ण जी की तरफ चित्रों द्वारा पेश की जाती है अपने अन्दर लक्षण और बुद्धी रखती है. इस जगह मैं फिर कृष्ण प्रेमियों से कहूंगा कि हम भी तो कृष्ण प्रेमी है.

आपको अपने श्री कृष्ण से ऐसी गलत बातों को सम्बंधित करने का कोई अधिकार नहीं बनता जिस से उनकी शान में कमी हो. मैं आशा करता हूं कि वे लोग जो श्री कृष्ण जी की ओर ऐसी बेहूदा बातें संबधित करते हैं इससे बाज आ जाएगें और उन घटनाओं को वैसे ही अच्छे अर्थो में

लोगों के सामने प्रस्तुत करगें जैसा कि हम करते हैं. इसी बात से ही आप लोगों का श्री कृष्ण जी महाराज से प्रेम का सबूत मिलेगा.

गोपियों की वास्तविक्ता

इसी तरह श्री कृष्ण जी के संबंध में ये बात भी हमारे हिन्दु भाई बयान करते हैं कि श्री कृष्ण जी की हजारों गोपियां थीं और फिर उनके साथ पत्नियों के सम्बन्ध स्थापित करने की बातें भी बड़े गर्व के साथ बयान करते हैं. प्रथम तो हमारे निकट गोपियों से भाव आपके शिष्य हैं जिन्होंने आपकी आज्ञा का पालन किया. क्योंकि शिष्यता का मुकाम ऐसा होता है कि उस्ताद का हर कहना माना जाता है जिसको स्त्री- पुरुष के संबंध से समानता दी जा सकती है कि जब कोई औरत किसी मर्द से शादी कर लेती है तो वह अपने आप को पूर्ण रुप से अपने आपको समर्पित कर देती है. अवतारों के अनुयायी भी बिलकुल इसी तरह अपने आप को अवतारों की गुलामी में दाखिल कर लेते हैं और उन के हर आदेश का पालन करते हैं. जिसकी वास्तविकता शब्द ''बैयत'' में पाई जाती है कि अपने आपको किसी के हाथों में बेच देना. वेलोग जो आप पर इमान लाए उन्होंने अपने आप को श्री कृष्ण जी के हाथों में बेच दिया था और वे आपके हर आदेश का पालन करते थे जिस का भी आप उनको आदेश देते. जैसे एक औरत मर्द के हर आदेश का पालन करती है. इसी तरह इस आका और गुलाम के सम्बन्ध को चित्र भाषा में कृष्ण जी की गोपियों की सूरत में पेश किया गया है.

इसका एक दूसरा भी पहलू हो सकता है वह यह कि जो लोग श्री कृष्ण जी से पति पत्नियों की बातें संबंधित करते हैं इसको उस जमाना के लिहाज से सही भी माना जा सकता है. कि गोपियां आपकी वास्तविक धर्म पत्नियां हों इसकी उदाहरण पहले वाले अवतारों में पाई भी जाती है. जैसा कि भाष्यकारों ने कुर्आने करीम की व्याख्या में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम को अधिक पत्नियोंवाला कहा है. लेकिन हमारे नजदीक गोपियों वाली घटना केवल शुद्ध मैथालॉजी है जो केवल उनके ख्यालों और प्रेम भावना को दर्शाती है. जो एक नबी और सुधारक को अपने अनुयायीयों और माननेवालों से होती है और होनी चाहिए.

बांसुरी की वास्तविक्ता

चौथी बात जो हज़रत कृष्ण जी की तरफ तस्वीरी जुबान में पेश की जाती है. वह आप का बांसुरी बजाना है यदि देखा जाए तो अवतार इस काम के लिए नहीं आया करते. उनका काम तो परमात्मा की बात को दूसरों

तक पहुँचाना होता है. और जब वे इशवाणी को दूसरों तक पहुंचाते हैं तो इस रंग में पहुंचाते हैं कि दूसरों के दिलों में उतर जाए. श्री कृष्ण जी भी जो बात कहते थे वह ऐसी ही होती थी जो दिलों में उतर जाए और लोगों के दिलों को मोह ले. क्योंकि बांसुरी भी यही काम करती है कि लोगों को अपनी तरफ खींच लेती है. इस लिए हज़रत कृष्ण की उन मोह लेने वाली और दिलों में उतर जाने वाली और दिलों पर कब्जा कर लेने वाली बातों को बांसुरी से समानता दी है.

हर जमाना में ऐसे लोग हुए हैं जो अध्यात्मिक बातों से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते रहे और वर्तमान समय में भी मौजूद हैं. तो फिर ये बात श्री कृष्ण जी के साथ क्यों संबंधित नहीं की जा सकती कि आप भी जब खुदा की बातें करते थे तो लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे. और आपकी बातें बांसुरीकी सी मीठी आवाज का मज़ा देती थीं जो दिलों पर अधिकार जमा लेती थी. लेकिन इसके साथ ही इसका एक अन्य पहलू भी हो सकता है वह ये कि उस जमाना में लोगों को परमात्मा की बातें इसी बांसुरी की सी धुन में सुनना अच्छा लगता हो इसलिए आप इस वाणी को गाने के रुप में लोगों के सामने पेश करते हों. और इसकी उदाहरण बाईबल के "अहदे अतीक" की किताबों से पेश की जा सकती है. जहां एक किताब का नाम " गज़लुलगज़लात" है जिस का कलाम एक गजल के रुप में पेश किया गया है.

इसी तरह जबूर हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम पर उतरी और आप एक बहुत बड़े अवतार थे. उनकी घटनाओं को प्रस्तुत करते हुए परमात्मा एक जगह कुर्आने करीम में फ़रमाता है :

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ

(سورۃ سبا آیت ١١)

भाष्यकार इसकी व्याख्या इस तरह करते हैं कि हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम जब जबूर को मधुर आवाज में पढ़ा करते थे, चूंकि आपकी आवाज मधुर थी, तो पहाड़ और परिन्दे भी आप के साथ पढ़ा करते जहां तक खुदा के कलाम को मधुर आवाज में पढ़ने की बात है तो इसका जिक्र कुर्आने करीम में एक जगह यूं आता है :

وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا (المزمل آیت ٥)

अर्थात और कुरान को मधुर आवाज में पढ़ा कर

इसलिए संभव है कि हजरत कृष्ण जी के जमाना में ईशवाणी को मधुरआवाज़ में पढ़ने के लिए बान्सुरी का प्रयोग होता हो. लेकिन जहां तक श्री कृष्ण जी की तस्वीर के साथ बांसुरी को दिखा कर ये उदाहरण प्रस्तुत

करना कि आप हर समय बांसुरी ही बजाया करते थे ये ख्याल ग़लत है और श्री कृष्ण जो अपने ज़माना के नबी थे उनकी शान के खिलाफ है.

गायों की वास्तविक्ता

श्री कृष्ण जी की तस्वीर के साथ जो पांचवीं चीज संबंधित की जाती है वह गायें हैं. और हिन्दुओं में गाय को एक बहुत बड़ा स्थान दिया जाता है. इस में कोई शक नहीं कि गाय लोगों के लिए बहुत लाभदायक पशु है. लेकिन इसके इलावा और भी बहुत से दूध देने वाले जानवर हैं जिन से मनुष्य उसी तरह लाभ प्राप्त करता है जिस तरह गाय से. परन्तु जितना प्रेम और आदर हिन्दुओं को गाय से है दूसरे जानवरों से नहीं. इसका एक कारण ये बताया जाता है कि श्री कृष्ण जी को गायों से बहुत प्रेम था. गायें सदा इनके साथ रहती थीं.

प्रिय पाठको !! अवतारों का काम सारी उमर पशु चराना नहीं होता . ये बात सत्य है कि बहुत से अवतारों ने अपने जीवन में पशु चराए लेकिन उनका असल काम जानवर चराना नहीं बल्कि मानव जाति में सुधार करना होता है. श्री कृष्ण जी की सारी जिन्दगी के साथ गायों को इस तरह जोड़ दिया गया है कि मानों आप केवल उन्हीं के लिए प्रकट हुऐ थे. ये बात भी बिलकुल ग़लत है. आपका वास्तविक काम मानव जाति की सेवा करना था. उनको प्रमात्मा से परिचित करवाना था. लोगों को ईश्वर की संतति के लिए लाभदायक अस्तित्व बनाना था. और आपने ऐसा ही किया. आप के साथ जो गायें दिखाई जाती हैं वह वास्तव में वे लोग हैं जो श्री कृष्ण जी की आज्ञा के पालन के परिणाम स्वरुप और आपकी शिक्षा दीक्षा के नतीजा में पूरी तरह प्रमात्मा की संतति के सेवक हो गये थे. जो हर वक्त श्री कृष्ण जी के साथ रह कर आपकी सोहबत में प्रमात्मा की संतति की सेवा करते. जिनको उनके शिष्य कहा जा सकता है.

एक ऐसा व्यक्ति जो कभी किसी को दुख न दे और हर एक का काम बिना किसी रोकटोक से करता चला जाए और हर बड़ेछोटे का कहा माने तो उसको आम मुहावरे में गाय कहा जाता है कि ये तो आदमी नहीं गाय है जबकि वह गाय नहीं होता. लेकिन क्योंकि इसमें गाय के गुण प्रवेश हो चुके होते हैं इस लिए इसको गाय कह दिया जाता है. इसलिए श्री कृष्ण जी ने शिष्यों के अन्दर चूंकि ऐसे ही गुण पैदा कर लिए थे. इसलिए उनको श्री कृष्ण जी की गायों की शक्ल में दिखाया जाता है. न कि वे वास्तव में गायें हैं.

श्री कृष्ण जी से जिस किस्म की बातें संबंधित की जाती हैं ऐसी ही बातें दूसरे अवतारों से जोड़ी हुई हैं और विशेष तौर पर हज़रत दाउद

अलैहिस्सलाम पर ऐसी तोहमते लगाई जाती रहीं और उनसे इश्क और मुहब्बत के अफसाने जोड़े जाते रहे हैं. जिस तरह उन पर लगाए जानेवाली तोहमतें और आरोप सही नहीं हैं उसी तरह श्री कृष्णजी पर लगाए जानेवाले आरोप और घटनाएं भी ग़लत हैं.

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब क़ादियानी मसीहे माऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं :

"'हिन्दुओं में एक नबी गुजरा जिसका नाम कृष्ण था. अफसोस कि जैसे दाऊद (अ. स.) पर शरारती लोगों ने गंदी और दुराचारी तोहमतें लगाई. ऐसी ही तोहमतें श्री कृष्ण पर भी लगाई गई हैं. और जैसा कि दाऊद (अ. स.) ख़ुदा का पहलवान और बहादुर था और खुदा से प्यार करता था वैसा ही आर्यवर्त में श्री कृष्ण था. इसलिए यह कहना सत्य है कि आर्यवर्त का दाऊद कृष्ण ही था. और इस्राईली नबियों का कृष्ण दाऊद (अ. स.) ही था. क्योंकि जमाना अपने अन्दर एक गरदिशे दौरी रखता है और नेक हो या बद बार बार दुनियां में उन जैसे पैदा होते रहते हैं.'"

(बराहईन अहमदिया, हिस्सा५ रुहानी खजाएन, जिल्द २१ पृष्ठ ११७)

सब पाक हैं पयम्बर इक दूसरे से बेहतर ।

लेकअज़ खुदाऐ बरतर ख़ैरुल वरा यही है ।।

पाठको ध्यान दें, कि श्री कृष्ण जी के हसीन चेहरा से जब हम शरारती ख्यालों और अफसानवी विश्वासों की धूल को साफ करते हैं तो आपका चेहरा कितना प्रकाशनीय और रोशन दिखाई देता है. और आपके अस्तित्व से नबुव्वत की रोशन किरणें निकलती दिखाई देतीं हैं इसलिए सुधारक व अवतार होने के नाते आपके वजूद को सम्मान और आदर के योग्य प्रमाणित करने के लिए अब किसी और व्याख्या की जरुरत बाकी नहीं रह जाती.

कल्की अवतार का आगमन

श्री कृष्ण जी के दोबारा आगमन के बारे में भी हिन्दुओं में एक विश्वास पाया जाता है. और आपके दोबारा प्रकट होने को "कल्की अवतार" की सूरत में प्रस्तुत किया जाता है. ये विश्वास अपनी जगह एक बहुत बड़ी हैसियत रखता है. जब ये बात प्रमाणित हो चुकी कि आप अपने समय के अवतार थे तो आप से जोड़े जानेवाले दोबारा आगमन के संबंध में भविष्यवाणी भी अवश्यही सच्ची है. क्योंकि अवतार परमात्मा से ज्ञान पा कर

भविष्यवाणी करता है. और वह वही भविष्यवाणी है जो इस लेख के आरम्भ में बयान कर दी गई है कि :

"जब भी धर्म का नाश और अधर्म की वृद्धि होती है. साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म की स्थापना के लिए युग युग में प्रकट होता हूँ."

(भागवत गीता अध्याय - ४ श्लोक ७-८)

श्री कृष्ण जी की इस भविष्यवाणी को बयान करते हुए आपके अनुयायी हमेशा से ही कलयुगी जमाने में आप के दोबारा आगमन की प्रतीक्षा करते रहे हैं. बिलकुल उसी तरह जिस तरह मुसलमान और ईसाई इमाम महदी और मसीह की प्रतीक्षा कर रहे हैं. वे लोग जिन्होंने श्रीकृष्णजी के दोबारा आने को बड़ी स्पष्टता के साथ दुनियां वालों के सामने प्रस्तुत किया है उन्होंने आप के पुनः आगमन की बहुत सी निशानियां भी बताई हैं. जिसमें खास तौर पर कलयुग के जमाना को आपके पुनः आगमन का जमाना कहा गया है. जो कि दुखों और तकलीफ़ों का दौर होगा जिससे आप दुनियांवालों को छुटकारा दिलाएंगे।

आज के जमाना के संबंध जब बात करें तो हर व्यक्ति के मुंह पर ये आता है कि ये "कलयुग" है. कलयुग के आम तौर पर दो अर्थ बताए जाते हैं. एक अर्थ तो बुरे युग से है और दूसरे अर्थ मशीनी युग से. और ये दोनों अर्थ इस जमाना में पूरे उतरते हैं. हिन्दु शास्त्र में चार युग बयान किये गये हैं. सतयुग इसका जमाना १२०० साल बताया जाता है दूसरा त्रेतायुग इसका जमाना २४०० साल बताया हुआ है. तीसरा युग द्वापर इसका जमाना ३६०० वर्ष बताया जाता है. और चौथा युग कलयुग है इसका जमाना ४८०० वर्ष तक लम्बा बताया जाता है। इसलिए यही वह युग है जिसमें बुराई इन्तिहा तक पहुंची हुई होगी और धर्म का नाश हो चुका होगा तो कृष्ण जी प्रकट होकर दुनियां का सुधार करेंगे.

कलयुग की निशानियां

हिन्दुओं की पुस्तकों मे कलयुग की बहुत सी निशानियाँ पाई जाती हैं. जिनके संबंध से माना गया है कलयुगी अवतार के प्रकट होने से पहले उनका पूरा होना ज़रुरी था उन निशानियों में से कुछ को अंकित करता हूँ.

"हे राजा !! कि कलयुग में लोग सचाई और धर्म छोड़ने के कारण से कमजोर होंगे. और आयु कम होगी और कर्म धर्म सब छूट जाएंगे. और बादशाह प्रजा से लगान वगैरा लेंगे, और दुख दिया करेंगे और बारिश कम

होगी जिस के कारण अनाज महंगा रहेगा..... और लोग कम आयु होने पर आपस में फ़साद और झगड़ा करेंगे और अपना धर्म छोड़ कर झूठी कसम और झूठी गवाही पैसे की खातिर देंगे. और पाप और पुण्य का ख़्याल और नेक और बद की पहचान जाती रहेगी चोरी वगैरा जारी करेंगे....... ब्रह्मणों के लिए निशानी न रहेगी कि जिस से कोई पहचान सके कि वह ब्राह्मण है और धनवाले की खातिर लोग जान देंगे और ऊंच नीच का कोई ख़्याल न रहेगा और व्यापार में धोखा और स्त्री की कोई जात का ख्याल न रखकर भोग विलास किया करेंगे और ब्राह्मण का धर्म कर्म छूट जाएगा........ और लोग अपने सर पर जटें बनाकर अपने आपको ब्रह्मचारी कहलांएगे और बात करने में ढीले होंगे और कंगाल पुरुष पैसे वाले को ऊंची जात का समझेंगे और झूठ बोलनेवाला सच्चा और बुद्धिमान कहलाएगा और हर एक जात तप जप और धर्म कर्म छोड़कर स्नान करने के पश्चात भोजन ले लिया करेंगे. और स्नान को उत्तम कहेंगे. अपने घमंड और बड़ाई की बातें किया करेंगे. और अपने आपको सुन्दर बनाने की खातिर सर पर बड़े-बड़े बाल रखेंगे और परलोक सुधार कोई न होगा. और देश में चोर डाकू ज्यादा होकर लोगों को तंग करेंगे और कष्ट देंगे और बादशाह चोरों से मिल कर लूट का माल छीन लिया करेंगे. छोटी छोटी आयु में विवाह किया करेंगे जिस से दस वर्ष की आयु में लड़के लड़कियों के बालक हुआ करेंगे. अच्छी जाति अर्थात कंवारी स्त्रियां दूसरों की इच्छा किया करेंगी और जो कोई खाने को देगा उसे अच्छा समझा करेंगी और अपने पेट की हर एक को पड़ी रहेगी. बहुत से पुरुष अनाज और कपड़े से तंग रहेंगे........ चारों वरन एक होकर स्त्रियां पुरुषों पर राज करेंगी और लड़के मां बाप की सेवा छोड़कर सुसराल के आदमियों की सेवा करके बहुत खुश होंगे. अपने निकट के तीर्थों को छोड़कर दूर के तीर्थों को अच्छा समझेंगे और वहां जाया करेंगे. तीर्थ के फल क़ा कोई पक्का विश्वास न होगा और हवन-यज्ञ बहुत कम होंगे."

इसी प्रकार आगे लिखा है कि :-

"कलयुग में तीन हिस्सा पाप और एक हिस्सा पुण्य रह जाता है. इस लिए धर्म के तीन पांव टूट जाते हैं. और एक पांव रह जाता है. इसलिए कलयुग में थोड़ा सा दान और सच्चाई रह जाती है. मगर आख़िर वह भी छोड़ देंगे. इसलिए कलयुग के समय में बहुत से लोग क्रोधी और बदसूरत और बुरे भाग्योंवाले पैदा हो कर एक एक पैसा की खातिर मनुष्य को जान से मार डाला करेंगे और अच्छे-अच्छे कुल की औरतें अपने पतियों से प्रेम छोड़कर दूसरों से करेंगी और स्त्रियां पैसे की होंगी और गरीबी की हालात में अपने पति को छोड़कर दूसरे के घर चली जाएंगी और हर एक खूबसूरत औरत के

पीछे फिरेगा. और अच्छे खानों की इच्छा करेंगे और सन्यास सब छूट जाएगा. और नौकर होंगे मगर दुख के समय अपने मालिक की सहायता नहीं करेंगे. अन्य स्थान पर जाकर नौकरी करेंगे और बहुत से लोग औलाद के इच्छुक होंगे. ओर जिनके न होने से भूतप्रेत की पूजा किया करेंगे. और माया की ख़ातिरपुत्र और भाई-भाई आपस में दुख देंगे. और कम आनाज होने पर लोग अपनी बेटी बेटा खाने की ख़ातिर बेच डालेंगे........ इस तरह अनेक पाप होकर परमात्मा की भक्ति कम हो जाएगी."

(श्रीमद भगवत पुराण बारहवां द्दण्द, पृष्ठ ६५०-६५४, उर्दू अनुवाद, प्रकाशक मुन्शी नवल किशोर, स्थान लखनऊ सन् १९३२ ई. महा. भारत वन प्रभ)

कलकी अवतार की प्रतीक्षा

श्रीकृष्ण जी महाराज ने कलयुग की जितनी भी निशानियां बताई थीं वह सभी पूरी हो चूकी हैं. यही कारण है कि एक जमाना में श्री कृष्ण जी के सच्चे प्रेमियों ने आपके दोबारा आगमन का बहुत बेचैनी से इन्तजार किया और आज भी कर रहे हैं. एक साहब लिखते हैं :

नगमा-ए-तौहीद फिर आकर सुना दे हिन्द को ।
पस्त है यह औज की सूरत दिखा दे हिन्द को ।।

गिर रहा है कारे ज़िल्लत में उठा दे हिन्द को ।
रुकशे बागे जना फिर से बना दे हिन्द को ।।

ऐ कृष्ण आबामें रफअत पर चढ़ा दे हिन्द को ।।

ढूंढते हैं हिन्द के दिन रात तुझको मर्दो जन ।
फिर तरसते हैं तेरे दीदार को अहलेवतन ।।

फिर मये इरफ़ां पिला दे साक़ी-ए-बजमे कुहन ।
खूने दिल से सींचते हैं बादा-कश उजड़ा चमन ।।

बर्क़ दिल में हिन्दुओं के फिर लगा ऐसी लगन ।।

(कलाम जनाव राम रखखामल बर्क़ बटालवी, प्रताप कृष्ण न''
अगस्त १९२५ ई.)

इस प्रकार की कितनी ही कविताएं आपके दोबारा आगमन के शौक में लोगों की लिखी हुई मौजूद हैं. प्रश्न यह पैदा होता है कि श्री कृष्ण अवतार थे और अवतार ग़लत बात बयान नहीं करता. जमाना भी आपकी

भविष्यवाणी के अनुसार वैसा ही आ गया, तोफिर कृष्ण प्रक़ट क्यों नहीं हुए?

इस तत्थ में अर्ज है कि हर धर्मवाला इस जमाना में एक अवतार के आगमन का प्रतीक्षक है. और सभी धर्मग्रन्थों में आनेवाले अवतार का युग यही बताया गया है. और प्रत्येक धार्मिक अपने धर्म से प्रकट होने के ख़्यालसे बैठा हुआ है. हिन्दुओं का ख्याल है कि वह हिन्दुओं में से होगा, इसाईयों का ख़्याल है कि वह ईसाईयों में से होगा और मुसलमानों का ख्याल है कि वह मुसलमानों में से होगा अब प्रश्न यह उठता है कि क्या प्रत्येक धर्म में एक एक अवतार होगा. या फिर सभी धर्मो की और एक ही अवतार आएगा. तो इसका उत्तर यह है कि अवतार सबका एक ही होता है और एक ही होगा. लेकिन जिस युग में एक कौम का दूसरी कौम से कोई संबंध न था और एक कौम अपने सिवा किसी दूसरी कौम को जानती ही न थी तो ऐसे समय में अलग अलग कौमों में अलग अलग अवतार ज़रुर आये परन्तु परमात्मा की और से लाई हुई शिक्षा एक समान थी जिसको परमात्मा ने धीरे धीरे अवतारों के द्वारा उन्नति दी. और जिस समय सारी दुनियांने एक कौम की शक्ल ग्रहण कर ली तो फिर परमात्मा ने सारी दुनियां के लिए एक अवतार को प्रकट किया ताकि सारी दुनियां एक विचार पर कायम हो जाए और एक घर की शक्ल ग्रहण कर ले.

मुसलमानों का इन्तज़ार करना

स्वयं मुसलमानों में भी इमाम महदी के प्रकट होने की प्रतीक्षा है. जैसा कि अबु-ल-ख़ैर नवाब नुरु-ल-हसन खान साहब ने १३०१ हीजरी में लिखाः

"इमाम महदी का आगमन तेरहवीं सदी पर होना चाहिए था. मगर ये सदी पूरी गुज़र गई तो महदी न आये. अब १४वी सदी हमारे सर पर आई है. इस सदी से इस पुस्तक के लिखने तक छ: माह गुज़र चुके हैं. शायद अल्लाह ताअला अपना फ़ज़ल व रहमो-करम फरमाए. चार छः साल के भीतर महदी प्रकट हो जाएं."

(इकतराबुसआत, पृष्ठ २२१)

आदरणीय नवाब सद्दीक़ हसनखान साहब वालीऐ भोपाल ने इमाम महदी की प्रतीक्षा का जिक्र इस यक़ीन के साथ फ़रमाया है कि मसीह व महदी जल्द आनेवाले हैं फ़रमायाः

"ई बन्दा हिर्स तमाम दारद कि अगर जमाना हज़रत रुहुल्लाह सलामुल्लाह अलैहि रादरया ब्रम अव्वल कसे कि अबलागे सलाम नबवी कुन्द मन बाशम."

(हिज्राजुलकरामा पृष्ठ ४४९, प्रकाशन १२९१ हीजरी)

अर्थात कि ये बन्दा बड़ी ख्वाहिश रखता है कि यदि ज़माना हज़रत रुहुल्लाह (ईसा) अलैहिस्सलाम का पाऊं तो पहला व्यक्ति जो उन्हें जनाब रसालत माअब सल्ललाहो अलैहेवस्सलम का सलाम पहुंचाए वो मैं होऊं.

ईसाईयों का इन्तज़ार

एक मशहूर ईसाई मिस्टर जे. ऐच. मयूर लिखते हैं "हमें सच्चे, निजात देनेवाले की ज़रुरत है. हां ऐसे निजात देनेवाले की जो हमें इन बेड़ियों से आज़ाद कर दे जिस में हम बचपन से ही जकड़े जाते हैं."

(किताब इलमुलअख़लाक़ और ताअलीम, पृष्ठ ९, बाहवाला "ज़हूरे इमाम महदी पृष्ठ ९२-९३)

ईसाईयों ने तो बहुत से अन्दाज़े लगाकर मसीह के दोबारा आगमन के लिए समय भी निश्चित किये थे. और The Appointed Time. हिज़गुलेरियस अपीअरींग, क्राइसिस सैकिण्ड कमिंग जैसी कई पुस्तकें भी लिखी हैं. भावार्थ सभी कौमें ही एक अवतार की प्रतीक्षक रहीं और अब भी प्रतीक्षा कर रही हैं.

सब धर्मों का एक अवतार

इस ज़माना में जिस अवतार की प्रतीक्षा की जा रही है वे आनेवाला सब कौमों के लिए एक होकर आऐगा. मेरी इस बात की पुष्टि कि सब धर्मों की तरफ आनेवाला अवतार एक ही होगा, जो स्वामी भोला नाथजी निम्न लिखित शब्दों में कहते हैं, फरमायाः

"दुनियां के तमाम धर्मे ग्रन्थों में लिखा है कि आजकल किसी रुहानी शक्ति का ज़हूर (आगमन) होनेवाला है. और वह आकर हमारे सारे दुखों को दूर करेगा."

हिन्दु कहते हैं कि वह पूर्ण ब्रह्म निष्कलंक अवतार धारण करेंगे. मुसलमानों का विश्वास है कि इमाम महदी का आगमन होगा. सिख्खों का विश्वास है कि कल्की अवतार प्रकट होगा. इसाई कहते हैं कि हज़रत ईसा खुदा से अलग होकर प्रकट होंगे . अब ये गौर करना है कि ये सारी हस्तियां एक होंगी या अलग अलग इसका जवाब ये है कि वह एक ही हस्ती होगी. जिसको सब अपना जानेंगे और भिन्न भिन्न नामों से पुकारेंगे या मुसलमान, हिन्दु, ईसाई, बुद्ध सब इन को अपनी अपनी नजर से देखेंगे. और सभी धर्मों

की उन बातों को जो कि ग़लती से धर्म का हिस्सा बन गई हैं दूर करके धर्म के पवित्र चेहरे को प्रस्तुत करेगा और इसको कोई पराया ख्याल नहीं करेगा.''

("रसाला सतयुगद्य', इलाहाबाद, मार्च १९४१, पृष्ठ३)

इसीतरह रसाल्ला सतयुग में ही एक जगह लिखा है कि :

"ये जमाना हमारी आशाओं के अनुसार एक सुनहरी जमाना होगा जिसमें खुदा की इच्छा अनुसार दुनियां चलेगी जिसके लिए परमात्मा की ओर से कोई आदमी ज़रूर आएगा जो दुनियां को दुखों से निकालकर खुदाके द्वार पर उसकी संतति को ले आएगा. सभी मजहब वाले इसको एक नजर से देखेंगे. और अलग अलग नामों से पुकारेंगे जैसे अवतार, मसीह, महदी, पीर, गुरु वगैरा ये भी संभव कि वह इन भिन्नताओं को दूर करे जो कि वक्त गुजरने के कारण से धर्मो में पैदा हुई हैं. हालंकि धर्म के साथ उनका कोई संबध नहीं. धर्म के रोशन चेहरा को लोगों के सामने प्रस्तुत करे और इस तरह उन सभी बुरे विश्वासोंको जिसे लोगों ने बेवकूफी से धर्मका हिस्सा करार दिया है दूरकर के एक सीधा रास्ता दिखाए"

(रसाला सत्तयुग इलाहावाद, मार्च,१९४१)

ऊपर बयान किया हुआ दृष्टिकोण केवल हिन्दुओं का ही नहीं बल्कि मुसलमानों और ईसाईयों के भी इसी प्रकार के ख्याल हैं कि परमात्मा की ओर से आनेवाला एक ही होगा और वह सभी धर्मो और क़ौमों का संशोधन करेगा और हर कौमवाला उसको अपना समझेगा. भावार्थ वह सभी धर्मो में पाये जाने वाले ग़लत विश्वासों को दूर करके उनको सही विश्वास पर कायम करेगा.

जब वो जमाना आ गया जिस में उसके आने की उम्मीद थी तो सबकी नजरें आकाश की ओर उठने लगीं और लोगों ने अपने ख़्याल के अनुसार अनुमान लगाने शुरु किये कि वह आनेवाला अवतार इतने समय में अवश्य ही प्रकट हो जाएगा. इसी बात का इजहार करते हुए लाहोर के एक मशहूर अखबार ट्रिब्यून ने अपने प्रकाशन ८ जुलाई १८९९ में एक ज्योतिष का लेख प्रकाशित किया जिसमें वह लिखता है.:

"सन् १९०० से एक नये दौर की शुरुआत हुई है. सन् १८०० से सन् १९०१ तक एक बड़े दौर की समप्ति होती है. जिसके अन्तपर सूर्य एक नये बुर्ज में प्रवेश करता है. ये घटना करीब २१६० वर्ष में एक बार होती है और इस का सूर्य मण्डल पर हमेशा गहरा असर पडता है, ऐसे अवसर पर सितारे एक जगह जमा होते हैं अर्थात एक राशी में जमा होते हैं. और इस तरह इनका जमा होना जमीन पर बुरा असर डालता है. सही

ऐतिहासिक ज्ञान की दृष्टि से जब पिछली बार धरती ने नये बुर्ज में प्रवेश किया था तो यीशु पैदा हुए थे. वास्तव में ईस्वी सन् हमारे मौजूदा हिसाब ईस्वी सन् १६० वर्ष पश्चात् शुरु हुआ. अर्थात जिसको हम १६० ई. सन् कहते हैं वह असल में ई. सन् का पहला वर्ष था. हिन्दुओं के कैलण्डर के लिहाज से जब सूर्य मसीह की पैदाइशसे पहले नये बुर्ज में प्रवेश हुआ था तो उस समय कृष्ण पैदा हुए थे."

"वास्तविक ज्ञान रखने वालों का इस बात पर ज़ोर है कि सन् १९०० ई. में कलमातुल्लाह का एक नया आगमन और पृथ्वी पर परमात्मा का एक नया अवतार होगा जो इन्सानियत के लिए वह कुछ करेगा जो मसीह ने अपने ज़माना में किया. तहक़ीक़ करनेवाले बताते हैं कि हर २१६० वर्ष पश्चात् एक नया बुद्ध या मसीह पैदा होता है जो संसार को उच्च जीवन के लिए सुचित कराता है. और लोगों को वह उच्च शिक्षा देता है जो सदियों तक केवल कुछ ही लोगों में सीमित रहती है."

जब कभी परमात्मा की ओर से कोई अवतार प्रकट होता है तो उसके आगमान के साथही सतयुग का आरम्भ होजाता है और कलयुग का अन्त और भगवत् पुराण में सतयुग के आरम्भ की एक निशानी इस तरह बताई गयी है:

यदा चन्द्रक्ष्य सूर्यक्ष्य तिष्य बृहस्पति,

एक राशौ समेष्यान्ति तथा भवति तत्कृतम

(श्री मद भगवत पुराण छन्द १२ अध्याय २, श्लोक २४)

अर्थात जब पख नक्षतर में चन्द्रमा, सूर्य और बृहस्पति एक राशी में इकट्ठे होते हैं तब सत्तयुग का आरम्भ होता है. ये निशानी श्रीवेद व्यास जी ने बयान की है.

अंजील पवित्र में भी जहां मसीह अलैहिस्सलाम के दोबारा आने का जिक्र है वहां आता है कि :

"और फौरन उन दिनों की मुसिबत के बाद सूर्य अन्धकार में हो जाएगा और चांद भी रोशनी न देगा और सितारे आसमान से गिरेंगे और आसमानों की शक्तियां हिलाई जाएगी और उस समय इबने आदम का निशान आसमान से दिखाई देगा."

(मती बाब २४, आयत २९-३०)

इसमें भी वही विषय बताया गया है जो वेद व्यास जी ने पुराण के इस प्रसंग से जो उपर गुजर चुका है निकाला है. क्योंकि सूर्य चन्द्रमा और धरती जब भी एक राशी में जमा होते हैं तो सूर्य चन्द्रमा ग्रहण होता है. जिसके परिणाम स्वरुप सूर्य व चन्द्रमा प्रकाश देना बन्द कर देते हैं. सूर्य, चन्द्रमा को आम तौर ग्रहण लगता ही रहता हैलेकिन जिस युग का यहां उल्लेख किया गया है वह आम युग नहीं बल्कि एक ख़ास युग है. और जो एक ख़ास अवतार के आगमन पर विशेष तौर पर होना था. वह वही अवतार होना था जिसने श्रीकृष्ण, मसीह इब्ने मरियम और महदी के रुप में प्रकट होना था. इसी विशेष युग के बारे में हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.स.) की भी एक भविष्यवाणी मौजूद है आप फ़रमाते हैं:

إِنَّ لِمَهْدِيِّنَا آيَتَيْنِ لَمْ تَكُوْنَا مُنْذُ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يَنْكَسِفُ الْقَمَرُ لِأَوَّلِ لَيْلَةٍ مِّنْ رَمَضَانَ وَتَنْكَسِفُ الشَّمْسُ فِي النِّصْفِ مِنْهُ۔

(سنن دارقطنی صـ۱۸۸ باب صفت صلوٰة الخوف والکسوف وہیئتہما مطبع فاروقی دہلی)

फ़रमाया :

हमारे महदी की सचाई के दो निशान हैं. जो ज़मीनो आसमान की पैदायश के दिन से आजतक किसीके लिए प्रकट नहीं हुए अर्थात रमज़ान के महीने में चन्द्रमा को (चन्द्र ग्रहण की रातों से) पहली रात को और सूर्य को (सूर्य ग्रहण की तिथियों में से) मध्य तारीख को ग्रहण होगा.

(सुनन दारे कुतनी, पृष्ठ १८८

बाब सिफाह तुससलातुलखसूफुल कसूफ व हाएते हेमा, प्रकाशन फारुक़ी देहली)

ये वही विषय है जो पुराण और अंजील में अंकित है. क्योंकि इस निशानी का आगमन एक खास अवतार के लिए होना था जिसके आगमन से सत्तयुग का आरम्भ होना था इसीलिए ही तीनों बड़े धर्मो में इस निशानी का उल्लेख मौजूद है:

प्रिय पाठको !! ये विशेष चिन्ह कि सूर्य और चांद और बृहस्पति एक राशी में जमा हो कर रोशनी देना बन्द करेंगे जो कि ग्रहण की सूरत में होना था सन् १८९४ में हो चुका और हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.स.) की स्पष्ट भविष्यवाणी के अनुसार ये योग सन् १८९४ ई. के रमजान के महीने में १३वी तारीख को चांद को ग्रहण लगने और २८वे रमजान को सूर्य को ग्रहण लगने से पड़ चुका है. इस संबंध में अखबार ''आज़ाद'' ने लिखा-

"इमाम महदी (अ:स:) की सच्चाई पर गवाह यह उच्च शान वाले निशान १८९४ सन् में १३११ हिजरी सन् के रमज़ानुल मुबारिक की निश्चित तिथियों १३वीं और २८वीं पर ज़ाहिर हुआ."

(अखबार आज़ाद, ४मई १८९४ सन,) (सिवल एण्ड मिल्टरी गजट ६ अप्रैल १८९४ सन्)

कलकी अवतार का नाम अहमद होगा

हिन्दू धर्म में कलकी पुराण को बहुत बड़ी विशेषता हासिल है इसमें आनेवाले युग के सम्बन्ध से बहुतसी भविष्यवाणीयां पाई जाती हैं. आखरी युग में बुराईयों ने फैल जाना था. जैसा कि आप इस सम्बन्ध में पीछे पढ चुके हैं. ऐसे समय में श्री कृष्ण के समरूप का नाम भी इसमें आता है. जो उन फैली हुई बुराईयों को दूर करेगा और दुनिया का सुधारक होगा. जैसा कि लिखा है:

अनुवाद- "कलकी भगवान अवन में और बागीचों को देखकर जो शहरके करीब थे दिल में बहुत प्रसन्न हुए. अहमद ने सन्मान और प्रेम से कहा ऐ तोते इस जगह हम स्नान करेंगे."

(कलकी पुराण उर्दू अनुवाद बाब १२ अध्याय, श्लोक ४७-४९ पृष्ट ४८)

(अनुवादक पन्डित ईसर परसाद शर्मा प्रकाशक पन्डित ईसरी प्रसाद मेनेजर अखबार भारतवासी. प्रकाशन सादिक प्रैस सदर मैरठ सन् १८९७ ई.)

कलकी पुराण के इस प्रसंग की तरह वेदों में भी अहमद नाम के ऋषि का उल्लेख मिलता है और हिन्दू धर्म का आधार वेदों पर माना जाता है. अहमद के सम्बन्ध से ऋगवेद, सामवेद, औरअथर्व वेदमें आता है कि अपने से पहले गुजरे एक महाऋषि का उप और अध्यात्मिक पुत्र होगा. अतः लिखा है -

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ । अहं सूर्यइवाजनी ॥

(अथर्व वेद कांड २०-छन्द ११८ मन्त्र १) (शब्दावली) (अहिमद्धि) अहमद ने (अंह) में (पितु) रब से (सूर्य) सूरज (मेधा) ज्ञानी (इवा) की तरह (मृत्स्य) धर्म शास्त्र, धर्म मार्ग (जनि) प्रकाश मय हो रहा हूँ (परिजगरभ) हासिल की।

अर्थात- ''अहमद ने अपने रब से ज्ञान से पूर्ण धर्ममार्ग को हासिल किया। मैं सूर्य की तरह (इससे) प्रकाशमय हो रहा हूँ.''

(अनुवादक- अबदुलहक साहिब विध्यार्थी पुस्तक मिसाकुन नबीयीन अंक-१-पृष्ठ १६२)

(प्रकाशक दारुल अशाइत कुतुब इस्लामिया बम्बई)

जनाब अबदुल हक साहिब विद्यार्थीने पितु का अनुवाद रब किया हैं जबकि पितु का असल अनुवाद पिता अर्थात बाप है। जिस का समर्थन दूसरे वेद भाषयाकारों ने किया है जिस में डा. सर. गोकुलचन्द नारंग एम. ए, जनाब पं. राजाराम जी वेद भाषयाकार मौलाना नासरुद्दीन फाजिल काव्य तीर्थ वेद भूषण बनारस हिन्दु विश्वविध्यालय शामिल हैं. (वेदों में अहमद पृष्ट २६-२९)

बहुत से वेद भाषयाकारों ने (अहिमव्दि) का अनुवाद ''मैं'' किया है जबकि ''मैं'' के लिए (अंह) शब्द प्रयोग होता है जैसा कि इसी श्लोक में आया भी है. जबकि यह शब्द जिस का अनुवाद ''मैं'' किया जाता है वह अहमद है. जो कि नाम है और अहमद कभी भी ज़मीर के तौर पर प्रयोग नहीं होता. भावार्थ जिस महा ऋषि के आने की आकाशवानी वेदों में और कलकी पुराण में मौजूद है उस का नाम ''अहम'' बयान हुआ है।

कलकी अवतार के प्रकट होने का स्थान

अथर्व वेद में एक ऋषि के आने का उल्लेख मिलता है और उस के आने का स्थान और बहादुरी दिखाने के स्थान को '''कदूर्न'' बताया गया है।

(अथर्व वेद कॉंड २० छन्द ९७ मन्त्र ३ सप्रसंग मुसलह आखिरुज ज़मान् पृष्ट ३९)

आनेवाले अवतार का स्थान मुसलमानों ओर इसाईयों की पुस्तकों में पूर्व और ''कदा''. बताया गया है.

इसी तरह कलकी अवतार के आने का स्थान ''सम्भल'' भी मान लिया जाता है. यह किसी विशेष स्थान का नाम नहीं है बलकि इस के अर्थ पर ध्यान देना आवश्यक है. सम्भल के अर्थ हिन्दी श्ब्दावली की विश्वसनीय और प्रसिद्ध पुस्तक पदमचन्द्र कोश में यूँ किये गए हैं.

१) शान्ति की जगह- २) पवित्र स्थान ३) ईश्वर की पूजा का स्थान.

इसी तरह इस के अर्थ जल्दी-जल्दी उन्नति करने वाला और दलीलों से विजयी होने वाले के भी होते हैं. भावार्थ यह कि आनेवाला कल्की अवतार स्वंय हिन्दुओं के निकट हिन्दुस्तान में आनेवाला है. इसी तरह इन प्रसंगो के प्रकाश में इस के बहादुरी दिखाने का स्थान "कदून", "कदा", शान्ति की जगह, पवित्र स्थान आदि होगा.

कल्की अवतार का आगमन

जब बरसात का मौसम आ जाए और बरसात न हो तो सभी आसमान की तरफ नजर लगा कर दुआ करते हैं और तेज गर्मी को देखते हुए अपनीअपनी कल्पना के अनुसार अनुमान लगाते हैं. कि इतने दिनों के भीतर वर्षा होगी. इसी प्रकार जब परमात्मा की ओर से आने वाले अवतार के प्रकट होने का जब समय आ जाता है तो सारी दुनियां ही अनुमान लगाना आरम्भ कर देती है. यही कारण है कि आज से एक सौ साल पूर्व प्रत्येक धर्मवाले ने आनेवाले अवतार के बारे में अन्दाजे लगाने शुरु कर दिये थे. और इस अन्दाज़ा लगाने वालों में हिन्दु, मुस्लिम, सिख ईसाई सभी शामिल हैं. और हर धर्म से हवाले पेश किये जा सकते हैं. ये कैसे सम्भव है कि सभी लोगों के अनुमान ग़लत हों और जबकि इस कलयुगी अवतार के आने की भविष्यवाणियां सभी अवतारों ने की हों. नबी तो परमात्मा की ओर से ज्ञान पा कर बोलता है यदि हम ये कहें कि भविष्यवाणियों के अनुसार कोई भी न आया तो इसका अर्थ ये निकलेगा कि ये सभी अवतार जिन्होंने कल्की अवतार के बारे में भविष्यवाणियां की थी (नऊज़बिल्लाह) सभी झूठे है. जबकि ये सम्भव नहीं हो सकता. अवतार खुदा से ज्ञान पाकर बात करता है. यदि हम नबी को झूठा कहें तो ये बात परमात्मा पर भी जाती है. जब कि परमात्मा की ओर ऐसी बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती.

ये तो सम्भव है कि परमात्मा की ओर से आनेवाला अपने समय पर आया हो. लेकिन लोगों ने उसे पहचाना न हो और वे अनुमान जो लोगों ने बताए वे आगे पीछे हो गए हों.

प्रिय पाठको यही सत्य और वास्तविकता है. परमात्मा की ओर से कल्की अवतार अपने समय पर आया. बहुतसे लोगों ने हर कौम से उसे स्वीकार किया और बहुत से लोग हैं जो इन्कार के साथ साथ इसका विरोध

कर रहे हैं. आनेवाले कलकी अवतार ने सभी धर्मो में आनेवाले अवतारों के रुप में अपने आपको पेश किया. आप फ़रमाते हैं :

"मेरा इस युग में परमात्मा की ओर से प्रकट होना केवल मुसलमानों के सुधार के लिए नहीं बल्कि मुसलमान, हिन्दुओं और ईसाईयों तीनों का सुधार मन्जूर है. जैसा कि परमात्मा ने मुझे मुसलमानों और ईसाईयों के लिए मसीहे माऊद करके भेजा है. ऐसा ही मैं हिन्दुओं के लिए बतौर अवतार के हूं. और (समय बीस वर्ष और कुछ अधिक से) इस बात को प्रसिद्धि दे रहा हूं कि मैं उन गुनाहों को दूर करने के लिए जिन से धरती पूर्ण हो गई है जैसा कि मसीह इब्ने मरियम के रंग में हूं. ऐसा ही राजा कृष्ण के रंग में भी हूं, जो हिन्दु धर्म के सभी अवतारों में बड़ा अवतार था. या यूं कहना चाहिए कि अध्यात्मिक दृष्टि से मैं वही हूं. ये मेरी कल्पना और सोच से नहीं बल्कि वह परमात्मा जो जमीन व आसमान का खुदा है इस ने मेरे उपर स्पष्ट किया है. और न एक बार बल्कि कई बार मुझे बताया है कि तू हिन्दुओं के लिए कृष्ण और मुसलमानों और इसाईयों के लिए मसीह माऊद है."

(लैक्चर सयाल कोट पृष्ठ २६, रुहानी खज़ाएन अंक २० पृष्ठ २२८)

इसी प्रकार आगे फ़रमाते हैं

"अब स्पष्ट हो कि राजा कृष्ण जैसा कि मेरे पर ज़ाहिर किया गया है. वास्तव में ऐसा कामिल इन्सान था जिस की उदाहरण हिन्दुओं के किसी ऋषि और अवतार में नहीं पाई जाती और अपने समय का अवतार अर्थात नबी था. जिस पर परमात्म के ओर से रूहुल कुदुस उतरता था. वह प्रमात्मा की तरफ से फतहमद और बा इक़बाल था. जिसने आर्यवर्त की धरती को पाप से साफ किया. वह अपने युग का वास्तव में नबी था. जिसकी शिक्षा को पीछे से बहुत बातों में बिगाड दिया गया. वह परमात्मा के प्रेम से पूर्ण था और नेकी से दोस्ती और बुराई से दुश्मनी रखता था. परमात्मा का वचन था कि अन्तिम जमाना में इसका समरूप अर्थात अवतार पैदा करे इसलिए वह वादा मेरे आगमन से पूरा हुआ और भविष्यवाणियों की निसबत एक यह भी इल्हाम (आकाशवाणी) हुआ था कि "हे रूद्र गोपाल ! तेरी महिमा गीता में लिखी गई है" इसलिए मैं कृष्ण से मुहब्बत करता हूँ क्यों क्रि मैं इसका समरुप हूँ."

(लैक्चर सयालकोट पृष्ठ-२७, रुहानी खजाएन अंक २०; पृष्ठ २२९)

प्रिय पाठको, उपरोक्त लिखित दाअवा हिन्दुस्तान की सर जमीन में पैदा होने वाले महाऋषि और अवतार मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम का है. आप पंजाब के एक छोटे से गांव क़ादियान जिला

गुरदासपुर में पैदा हुए. और आपने सन् १८८९ ई. को एक जमात की आधारशिला रखी. जिसका नाम जमाते अहमदिया है. जिसमें हर कौम और धर्म के लोग शामिल हुए. और उनकी सच्चाई के लिए सन् १८९४ ई. में सूर्य और चन्द्रमां भी एक राशी में इकठ्ठा हुए और अपना प्रकाश बन्द करते हुए उसकी सच्चाईपर मोहर लगा गये.

हजरत मिर्जागुलाम अहमद क़ादियानी का वास्तविक नाम 'अहमद' है. जिसका वेदों और कलकी पुरान में उल्लेख मिलता है. आप के नाम के साथ मिर्ज़ा और गुलाम ये आपके खानदानी खिताब हैं जो किसी ज़माने में आपके ख़ानदान को मिले थे. जिसका उल्लेख स्वयं इसी महाऋषि ने अपनी पुस्तक हक़ीकतुलवही रुहानी खजाएन अंक २२ पृष्ठ ८१ पर किया है. इसी तरह इस अहमद के आगमन की भविष्यवाणी जिस ने श्री कृष्ण का रुप बन कर आना था आप के अस्तित्व में पूरी हो चुकी है. इसी तरह इस महाऋषि के बहादुरी दिखाने का स्थान ''कदून'' बताया गया था. वह वही ''कादियान'' है जहां आप पैदा हुए जिसको हजरत मुहम्मद (स.अ.स.) ने ''कदा'' के नाम से याद किया. इसी तरह ''संभल'' स्थान के अर्थ ''शान्ति का स्थान'', पवित्र स्थान और ईश्वर की पूजा का स्थान कादियान पर ही पूरे उतरते हैं क्यों कि इस जगह को **क़ादियान दारुलअमान** के नाम से याद किया गया. इसीप्रकार उस महाऋषि के आने से ये जगह अर्ज़े हरम' बन गई. साथ ही ईश्वर की पूजा का स्थान बनी और सारी दुनियां से लोग वहां इबादत करने और विभूति हासिल करने आते. इसी तरह वह जमात जो यहां से निकली वह दलीलों से लोगों पर विजय पाती है.

इसलिए वे सभी कौमें जो कलकी अवतार की प्रतीक्षा में हैं उन के लिए ये शुभ समाचार है कि वह आनेवाला अवतार अपने समयपर प्रकट हो चुका . और श्री कृष्ण जी महाराज की भविष्यवाणियों को पूरा करते हुए, अपनी और श्रीकृष्ण जी महाराज की सच्चाई पर मोहर प्रमाणित कर चुका है. और हजरत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब क़ादियानी अलैहिस्सलाम का कृष्ण होने का दाअवा हिन्दु भाईयों के लिए ग़ौर और तहक़ीक के योग्य है.

प्रिय पाठको आनेवाला अपने समयपर आया और आपके सिवा किसी ने भी ''मुसलेहआख़िरुजमां'' होने का दाअवा नहीं किया है.

ऐ कृष्ण प्रेमियों अगर तुम को हजारों वर्ष पूर्व गुज़रे कृष्ण से प्रेम है तो इसका अवश्य ही ये परिणाम होगा कि इसके कहने के अनुसार आने वाला और इस के नाम पर आने वाले से प्रेम करो. और इसे स्वीकार करो कि वह तुम्हें अध्यात्मिक सच्चाईयां देने आया है. तुम्हारे कर्मो में सुधार करने और पाप से बचाकर पुण्य के रास्ते पर लगाने आया है जिसका ये कहना है कि :

''मैं अत्यन्त आदर और नम्रता के साथ मुसलमान उल्मा ईसाई पादरियों हिन्दु व आर्यसमाजी पंडितों को घोषणा पत्र भेजता हूं और यह सूचना देता हूँ कि मैं नैतिक, आध्यात्मिक तथा मान्यताओं में सम्बंधित कमज़ोरियों और गलतियों का सुधारने के लिए भेजा गया हूँ. मेरा कदम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पद चिन्हों पर है. उन्हीं अर्थो में मसीहे मौऊद कहलाता हूँ. क्योंकि मुझे आदेश दिया गया है कि मैं केवल प्रभु के चिन्हों और पवित्र शिक्षाओं द्वारा सत्य का प्रचार करुं. मैं इस बात का विरोधी हूँ कि दीन के लिए तलवार उठाई जाए और मजहब के लिए खुदा के बन्दों का ख़ून किया जाऐ. और मैं नियुक्त किया गया हूँ !! कि जहां तक मुझ से हो सके उन सभी त्रुटियों को मुसल्मानों में से दूर करुं और पवित्र सदव्यवहार और नम्रता और उदारता और न्याय और सत्य के मार्ग की और उनको बुलाऊं. मैं सभी मुसल्मानों, ईसाईयों, आर्यो पर ये बात प्रकट करता हूं कि दुनियां में मेरा कोई शत्रु नहीं है. मनुष्य मात्र से सहानुभूति करना मेरा कर्तव्य है और झूठ और अनेकेश्वरवाद और अत्याचार और प्रत्येक कुकर्म और अन्याय और बुरे व्यवहार से अप्रसन्नता प्रकट करना मेरी नीति है,''

(अरबाईन-१, पृष्ठ१२)

प्रिय पाठको हम सभी कृष्ण प्रमियों को निमन्त्रण देते हैं कि आओ तुम भी इस कृष्ण को स्वीकार करो ताकि तुम्हें भी लोक और परलोक की शान्ति नसीब हो. इसी तरह ये हमारा भारत वर्ष अमन और शान्ति का गहवारा बन जाए.

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी कल्की अवतार फ़रमाते हैं:

सिदक से मेरी तरफ आओ इसी में खैर है.
हैंदरिंदे हरतरफ मैं आफ़ियत का हूं हिसार.
तिश्ना बैठे हो किनारे जुए शीरीं हैफ है.
सर जमीने हिंद में चलती है नहरे खुशगवार

अन्त में मैं कल्की अवतार हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के एक शेअर के अनुसार यही कहता हूं :

जब खुल गई सच्चाई फिर उसको मान लेना।
नेकों की है ये खसल्त राहे हया यही है!!